अंक-10 वर्ष-2016 अलख अक्तूबर-2016

विषय सूची

01. संकल्प का समय सम्पादकीय..... 01
02. प्रवचन स्वामी विशेषानंद जी 02
03. ਕਿੱਸਾ ਪੂਰਨ ਭਗਤ 16
04. ਦੁਸ਼ਹਿਰਾ—ਅਧਿਆਤਮ ਦੀ ਰਾਹ 17
05. ਸਹੀ ਤੇ ਸੱਚੀ ਦੀਪਾਵਲੀ 18
06. तत्क्षण नोट किये वचन..... 19
07. Dhammapada 20
08. ਬਾਨੀ ਦਾ ਸਾਰ 22
09. सत्संग सूचनाएं 24

अगला सत्संग

द्वितीय रविवार

13-नवम्बर-2016

आप का बेटा हो एक हाथ में आपने लड्डू रखा एक में रखा सौ रूपया वो जब तक छोटा था तब तक उसके लिए लड्डू सही था बड़ा है। जब थोड़ी सी अक्ल आई तो कहता नहीं अब लड्डू छोड़ो तुम सौ ही दो पिता तब सो नहीं देता। जब तक हम अबोध होते हैं हमें लड्डू भारी लगता। जब गुरू महाराज मिलते हैं तो गुरू महाराज यह समझ देते हैं कि सौ बड़ा है।

साभार पृष्ठ 3 से

अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय

सिद्ध झण्डी, फगवाड़ा रोड़, माहिलपुर (होशियारपुर)

पिन—146105

website:-aavpashram.com

Email- aavpmahilpur@gmail.com

संकल्प का समय

सम्पादकीय.....

आदरणीय प्रेमी जन,

वर्ष 2016 का वो समय शुरू हो चुका है जिसे त्यौहारों का समय या Festival Season कहा जाता है। इस समय की सही शुरूआत है नवरात्र— फिर करवाचौथ, दशहरा, दिपावली इत्यादि ''आंख खोल कर देख लीजिएगा इधर उधर कहीं बैठे-बैठे गाड़ी निकल ही न जाए।'' अज़मत सुल्तान के ये शब्द भी यही समझाते हैं कि समय का पता नहीं कब निकल जाएगा इसलिए इसका भरपूर लाभ ले लें। वैसे भी खुशी का समय जल्दी निकल जाता है। खुशी में ये होश ही नहीं रहती कि अनमोल समय अंजलि में लिए जल की भांति घट रहा है इसलिए संभव हो तो कुछ प्रण जरूर कर लेना, कोई संकल्प ले लेना इन त्यौहारो पर—कैसे कि जो भी तुम्हें अपने जीवन की कमी लगे उसे इसी समय से हटा जाएं।

त्यौहार घर की गंदगी निकालने का प्रर्याय मात्र न बन जाएं। त्यौहार ऐसे हों कि भीतर की शुद्धि हो जाए।

अंतर नाम अराध्यां तम मन की मल जाए।
बिना नाम नहीं मुक्तिया—अलख कहे समझाए।।

प्रवचन स्वामी श्री विशेषानंद जी महाराज

प्रभु प्रेमी सज्जणों कुछ संत भक्त ऐसे-ऐसे संसार में आए जिनका जीवन का कुल उदेश्य मात्र एक उदेश्य क्या था परमात्म भजन या कहो परमात्म ध्यान उन्होंने एक ही बात अपने तरीके से समझाई। अपने तरीके से मैं इसलिए कहता हूं क्योंकि गुरू नानक इत्यादि यह दस महांपुरूष थे इन्होंने पंजाबी भाषा का प्रयोग किया ईसा थे। उन्होंने अपने समय में यहूदियों की भाषा का प्रयोग किया। किसी ने संस्कृत का प्रयोग किया ऐसे जितने महापुरूष जिस स्थिति में जिस समय में जहां हुए उन्होंने उसी के अनुसार अपनी-अपनी भाषा में सत्संग की परमात्मा की महिमा गाई।

परन्तु हे प्रेमी! दूसरी तरफ हैं संसारिक जीव इसका जब भी कुछ जीवन में लक्ष्य रहा तो लक्ष्य क्या था Dividation बांटना इसने उस बांट बखेड़े में महांपुरूषों को भी ले लिया किसी को धर्म के नाम पर किसी को ग्रंथों के आधार पर किसी को जाति के आधार पर वहां पर भी Divide कर दिया। उतने बांट बखेड़े में भी एक लक्ष्य फिर भी भूला रहे वो लक्षय था परमात्मा का नाम। उस लक्ष्य को संसारिक जीव ने कभी दोहराया ही नहीं। कभी समझा ही नहीं। जब भी बात करी तो धर्म से शुरू करी और आगे को ले गये और परमात्मा की चर्चा कभी भी जिस के भी घट में उतरी प्रकट हुई वो धर्म से नीचे नीचे है जड़ों में है क्योंकि धर्म से ऊपर जिसका भी वर्णन करें वो तकरीबन होती हैं क्रियाएं, पाठ, जप, तप लेकिन जहां तक सवाल परमात्म पदार्थ का है वो है जड़। उसका धर्म से कोई लेन देन नहीं। जिसके भी घट में परमात्मा अवतरित हुआ उसके अन्दर धर्म का कोई बिलकुल भी शोर नहीं। वहां यह सवाल नहीं रह जाता कि किस धर्म से संबंधित हैं। किस मजहब से है। वहां पर एक ही बात रहती है अनुभव। सिर्फ और सिर्फ अनुभव।

एक संत हुए अलारका राम उनका नाम था। उनके बारे में एक प्रचलित कथा है। कहा जाता है कि उनके पास कुछ जैन धर्म के कुछ लोग गये कुछ सनातनी लोग गये जाकर उनको प्रश्न करते हैं कि श्रीमान आप किस धर्म से संबंधित हैं। आप का धर्म क्या है अलार्क राम प्रश्न का जबाव सीधा-सीधा नहीं देते। वे पूछते हैं कि मुझे यह बताओ कि तुम किस धर्म के माध्यम से परमात्मा को जानना चाहते हो। वो कहते जी नहीं हम तो सिर्फ इतना पूछते हैं कि आप का धर्म कौन सा है? अलारका राम कहते हैं कि यह तो प्रश्न ही बेकार। इसका तो सवाल ही नहीं कि मैं किस धर्म से और तुम किस धर्म से। मूल तत्व है परमात्मा, तुम बताओ तुम कैसे जानना चाहते हो? तो उन्होंने कुछ जबाव नहीं दिया उठकर चले गये बाहर जाकर दोनों आपस में सांठ गांठ करते हैं कहते कि देखो अपने आप को बहुत ज्ञानी समझता है हमारे एक प्रश्न का तो जबाव नहीं दे पाया।

अब हे प्रेमी! यह झगड़ा ज्ञानी और अज्ञानी के बीच चलता ही रहा। आज भी है आगे भी रहेगा क्योंकि जानकार—वो बात करेगा जानने की अनुभव की। अज्ञानी वो जब भी बात करता है वो बात करता नाचने की गाने की। अभी एक सज्जन ने

एक video भेजी जिसमें उपस्थित व्यक्ति का नाम तो पता नहीं कौन है सन्यासी हैं उनका सिर बिल्कुल बालहीन है तो तकरीवन तकरीवन उम्र भी कोई 50-60 के बीच की । तो दिखाया यह है कि सन्यासी कुर्सी पर बैठा है और उनके शिष्य आगे पंजाबी गाने लगाकर dance कर रहे हैं। वो भी उसमें ताली मार रहे हैं खुश हो रहे हैं। हे प्रेमी! यहां भक्त कैसे जैसे गुरू। भक्त यह चाहते हैं कि आप हमारे साथ नाचो कूदो पंजाबी गानों पर डांस करो हे प्रेमी! कलयुग में फिर गुरू भी ऐसे ही हैं। चलो दो ठुमके लग गये तो फिर क्या बिगड़ जाता।

नाचे कूदे तोड़े तान, दुनिया बाको राखे मान।

उस वीडियो के नीचे लिखा है कि सत्संग आफ गुरू जी। कि यह गुरू जी का सत्संग हैं। हे प्रेमी! अब कलयुग है तो सत्संग भी वैसा ही है। मैंने कभी एक माता जी को एक प्रश्न किया था। कभी जब एक दो सत्संग में आई मैंने कहा जी आप बीच में से उठकर चली जातीं हैं। क्यों? कहती मैंने जितने सत्संग देखे वहां पर तो लोग नाचते हैं गाते हैं इतनी अच्छी ढोलकी बजती है आप तो ऐसे जुफ्फ करके बिठा देते हो। यह इसमें मज़ा नहीं है। अब हे प्रेमी! दुनिया मजा ढूंढती है। मजा किसमें है। पर ध्यान रखना जहां भी मजा होगा वहां कान बंद क्योंकि यदि कान खुलेंगे तो शरीर स्थिर हो जाएगा। असूल है यह जैसे ही अन्दर के कान खुलने शुरू होते हैं त्यों त्यों आदमी टिक जाता है। और जैसे-जैसे कान बंद होते हैं वैसे वैसे मज़ा ढूंडता है। इसलिए ज्यादतर जो महिलाएं हैं यह उन कीर्तनों को पसंद करती जहां पर नाचने का मौका मिले। उसका कारण है पूरी Exertion उतारनी जाकर। सन्यासी कलियुग के ऐसे हैं कि वो कहते हैं हमें भई क्या लेना तुम्हें नाचना पसंद है तो तुम नाचो। वो भी नचाए जा रहे हैं। सुनने को सुनाने को दोनों ही तैयार नहीं और गुरू नानक साहिब का वचन क्या है।

नाचे कूदे तोड़े तान दुनिया वाको राखे मान।

कहते जो नाचते हैं तान तोड़ देते हैं छलांगे लगा देते हैं दुनिया कहती यह बहुत बड़े संत हैं क्योंकि उछलते हैं और जबकि जो ब्रह्मज्ञानी महांपुरूष थे उनका जीवन चरित्र था शांत। जो-जो भी कोई कुछ करता था उन्हे वहां से रोका। रोक कर कहा अपने अंदर उतर शांत हो हम बाहर कुछ गाते थे, कुछ रटते थे, पूजते थे, मानते थे महांपुरूषों ने सारी चीज़े एक तरफ को करी उन्होंने अंदर नाम पकड़ाया। पर जैसे मैंने कहा एक तरफ करी उसका अर्थ कोई और मत ले लेना

हुआ क्या कि जम्मू की बात, एक जगह सत्संग करके आया तो किसी सज्जन ने क्या जैसे मैं बस में बैठा था उसने कपड़े देखे तो पूछ लिया कि जी आप कैसे? क्या सिद्ध झंडी आश्रम से। मैंने कहा हां। कहता कि सुना कि आप के जो गुरू महाराज हैं वो कहते हैं कि मूर्तियां ऊठाकर पानी में बहा दो। मैंने कहा मुझे तो इतने साल हो गये मैंने तो नहीं सुना तूने पता नहीं कहां से सुन लिया। फिर कहता वो कहते यह भी न मानो वो भी न मानो। मैंने कहा जी नहीं ऐसा नहीं है। कहता नहीं जी लोग तो ऐसे ही कहते हैं। फिर मैंने समझाया मैंने कहा गुरू महाराज यह नहीं कहते कि यह भी न पूज वो भी न पूज। गुरू महाराज यह कहते हैं कि यह सही औऱ यह गल्त उठा क्या उठाओगे। गुरू महाराज कहते ही नहीं कि इसको छोड़ गुरू महाराज कहते इसको पकड़। तू सच्च पकड़ क्या है? छोड़ने को तो यहां पकड़ा ही कुछ नहीं। गुरू महाराज कहते सत्त सम्भाल मैंने कहा आप ऐसे समझ लीजिए **आप का बेटा हो एक हाथ में आपने लड्डू रखा एक में रखा सौ रूपया वो जब तक छोटा था तब**

तक उसके लिए लड्डू सही था बड़ा है। क्योंकि वह तोलता है। लड्डू बहुत भारी सौ का नोट बड़ा हल्का। जब थोड़ी सी अक्ल आई तो कहता नहीं अब लड्डू छोड़ो तुम सौ ही दो पिता तब सो नहीं देता। कहता लड्डू ले ले । तो मैंने कहा जी जब तक हम अबोध होते हैं हमें लड्डू भारी लगता। जब गुरू महाराज मिलते हैं तो गुरू महाराज यह समझ देते हैं कि सौ बड़ा है। बस इतना फर्क है अब यदि सौ बड़ा है। यह पता लगने के बाद कोई लड्डू छोड़ दे तो भाई उसकी गल्ती। न छोड़े पकड़े रखे यह भी उसकी गल्ती। यह तो उसका चित्त है करे न करे। गुरू महाराज कभी नहीं छुड़ाते। हे प्रेमी! तूं खाना खाने बैठे तेरा पेट भर जाये वो तेरी बात पर मां कभी नहीं कहती कि न ले। मां कहती और चाहिए वो कहता नहीं पेट भर गया। मां कहती नहीं ले ले मां क्यों कहेगी न खा। मां कहेगी तेरा पेट है खा ले। हे प्रेमी! जब संतुष्टि हो जाती तो चित्त किसी और तरफ को जाता नहीं। इसलिए ग्रंथकार कहते हैं:-

जिन जन अपना गुरू अराध्या,
तिन जन और न देव।।

जिसने गुरू महाराज को अराधना सीख लिया जो गुरू महाराज को समझ गया उसके लिए कोई देवता नहीं। क्योंकि देवता का अर्थ है Past बीता हुआ, कभी था, शायद नहीं था। पता ही नही। लेकिन गुरू महाराज का अर्थ है ''है'' अर्थात Present। ''है'' को कभी झुठलाया नहीं जा सकता। ''था'' का कभी कोई विश्वास नहीं और दूसरी तरफ गुरूवाणीकार यह भी कह गये कि देवता झूठ नहीं। पर देवता से ऊपर परमात्मा है।

सो जन सर्व देव का देव।

सब देवताओं का देवता है आदि देव है उसी को भगवान गीता में यह कह गये कि हे अर्जुन! मैं सब ईश्वरों का भी ईश्वर हूं। ईश्वरों का ईश्वर अर्थात एक तुम्हारी सृष्टि का ईश्वर है उनमें से भी कोई कहता शिव बड़े हैं, राम बड़े, कृष्ण बड़े तुम्हारे अपने। Aliens में जाओगे उनका कुछ अपना विधान है वो किसी और शक्ति को मानते हैं जैसे हम लोग यहां अपने देवी देवताओं का मानते हैं ऐसे ही Aliens वो Power को मानते हैं। उनमें भी एक पूजा है जिसे कहा जाता Power। पॉवर के भक्त हैं शक्ति। तो हे प्रेमी! असीधे तौर पर तुम भी उसी के हो। बस यह है वो जरा और समझते हैं तुम और समझते हो अनुभव सब का वहीं टिकता। ऐसे ही कहीं और देश में चले जाओ, वो किसी और को मानते हैं।

सबकी मान्यता अपनी-अपनी। सबके ईश्वर अपने-अपने। पर भगवान कहते मैं सब ईश्वरों का ईश्वर। जब यह अर्थ कोई आम आदमी पढ़ता है तो वह यह अर्थ लेता है कि भगवान कृष्ण ने यह कहा कि मैं हूं। हे प्रेमी! वहां कृष्ण ने नहीं कहा। वहां उसने कहा जो कृष्ण के भीतर भी बैठा है। जिसके बैठने से कृष्ण हैं, जिसके निकल जाने से कृष्ण समाप्त हो गये। कौन था वो, वो बोला कृष्ण के भीतर वही बोला गुरू नानक साहिब के भीतर, वही बोला ईसा के भीतर सबके भीतर बोलने वाला एक। इसलिए वो कभी पुराना नहीं हो गया क्योंकि यदि कृष्ण ही परमात्मा हों तो परमात्मा जन्मता और मरता है। पर नहीं, परमात्मा न जन्मता न मरता। परमात्मा का तो सवाल सदैव है तेरे भीतर से बोले उसके भीतर से बोले सबके भीतर से बोल रहा।

सो जन सर्व देव का देव।

कि वह परमात्मा सबका सब देवी देवताओं का भी आदि है मूल है लेकिन हे प्रेमी! बात है अनुभव की, बात है जानने की, जब तक उसे अनुभव न करे उसे जाने नहीं तब तक तेरा जीवन भी ढोलकी

पसंद करेगा। तेरा जीवन भी नाच पसंद करेगा कि नाचो गाओ नाचने गाने को कह लो या यह कह लो कि जहां पर भी कहीं किसी ने निमंत्रण दे दिया कि सत्संग है वहां पहुंच गये यदि देखा कि सुनना पड़ रहा तो कहते जी नींद आती है।

ज्यों ही ताल खड़की कि बस शुरू हो गये उसी समय शुरू और हे प्रेमी! कलयुग क्या कहें कि यहां पर गुरू हैं वह तालियां बजा रहे हैं कि नाचो ठीक है सारे नाचो। क्योंकि नाच को प्रधान मान लिया पर ध्यान रखना नाच में कभी श्रवण नहीं। नाच अपने आप में महत्वपूर्ण है। यदि किसी को नाचने की कला आ जाए ऐसे उठकर घूमे जाना जैसे मशीन लगी हो यह नाच नहीं।

हे प्रेमी! वो नहीं वो कहावत है कि यदि सबसे बढ़िया दुनिया में किसी का Dance देखना हो तो वो शराबी है। शराबी Step नये नये खोज लेता जो कभी किसी ने खोजे ही नहीं। परले दरजे का Dance तो हे प्रेमी! ऐसे ही जो जो तुम नाचते हो वो तकरीवन शराबी वाला डांस है। कोई दीन नहीं कोई अर्थ नहीं ऐसे ही जिधर को जी आया हिले जा रहे वो नागिण बड़ी बनाते हैं वो। हे प्रेमी यह शराबी डांस है माताएं जो कर लेती हैं यह भी शराबी डांस है। यह अपने एक नशे में मग्न हैं। वो नशा है Exertion उतारने का, वो नशा है अन्दर से थिरकने का बस हो गये।

सही अर्थों में जिसे नाचने की कला हो वो नाचना ध्यान में चला जाता वो नाच था बुल्ले शाह का उस नाच में नाचते-नाचते गिर गये बस होश नहीं। हे प्रेमी उस गिर गये का अर्थ तुम्हारे लिए बेहोशी है क्योंकि तुम्हारे को ज्यादा नाच लो तो B.P बढ़ जाता या B.P गिर जाता या खुद भी गिर जाते लेकिन वो नाच ध्यान की अवस्था का है। कभी आपने देखा होगा सीरियलस में शास्त्रों में या पढ़ा है कि भगवान शंकर नाचते हैं अब लोग उसे कहते तांडव नृत्य। तांडव नृत्य का अर्थ कि यह नहीं कि इधर उधर को बिना बजह हाथ पैर मारे जाने शक्लें बुरी-बुरी सी बनाए जानीं। और सही अर्थों में नाच की जब तक कला भी नहीं तब तक नाच में से ध्यान नहीं उपजता। नाच अपने आप में कला है पर हे प्रेमी! करे वो जिसकी टांगे सलामत हों। एक बार करे, दोबारा कई बार ऐसा गिरता कि फिर चलने से भी गया गुजरा। डांस तो फिर कौन करे?

लेकिन दूसरी तरफ है परमात्मा का यथार्थ भजन। यथार्थ भजन का अर्थ तूं शांत स्थिर होकर परमात्म भक्ति में उतर। मार्ग बहुत हैं—नाचने का भी मार्ग है यह भी उस तरफ को ले जाता पर बहुत कुछ चाहिए। पीछे ज्ञान ज्योति हो, गुरू कृपा हो तो होता। बुल्लेशाह ऐसे ही नहीं नाचने लग गये कोई डांसर नहीं थे बुल्ले शाह को पीछे गुरू महाराज जी की कृपा है। साथ में आज्ञा भी है हे प्रेमी! वहां नाच प्रधान नहीं गुरू आज्ञा प्रधान थी इसलिए गुरूनानक साहिब गुरूवाणीकार कुछ स्पष्ट वचनों में क्या समझा गये गुरू महाराज का वचन है:—

गुरू की मूर्त मन में ध्यान,
गुरू के शब्द मंत्र मन मान।

कहते कि और कुछ मत पकड़ना। यह कभी मत सोच लेना कि कल्याण भजन करने से है या कल्याण नाचने से है। हे प्रेमी! न कल्याण भजन करने से, न नाचने से। कल्याण गुरू आज्ञा में है। क्योंकि आज्ञा होगी तो भजन कर पाएगा नहीं तो उसी समय ताला बंद। उसी समय सारा कुछ जुफ्फ हो जाता फिर चाहे जो मर्जी करे जितना मर्जी तपों में उतर जाए। जितना मर्जी फिर अपने ऊपर कष्ट धारण करे ध्यान नहीं टिकता। ध्यान तभी है जब पीछे गुरू का वचन है

गुरू की मूर्त मन में ध्यान गुरू के वचन मंत्र मन मान।
गुरू के चरण हृदय लै धार। गुरू पारब्रह्म सदा नमस्कार।।

गुरू पारब्रह्म अब हे प्रेमी! यहां पर दो अर्थ हो जाते एक तो हमने गुरू महाराज का शरीर या चमड़ा देखा उधर को चल पड़े कि अब यह पारब्रह्म है वहां पर थोड़ा सा अन्तर है। जिस जगह गुरू महाराज जी ने यह वचन कहे गुरू की मूर्त हे प्रेमी! यह ऐसे Duality है जैसे गीता में है, गीता में यदि तुम दसवां अ्ध्याय पढ़ो वहां पर हमें भगवान कृष्ण के माध्यम से हमें यह सुनने में आता नदियों में गंगा मैं हूं, जलाश्यों में समुंदर मैं हूं, चन्द्रमा मैं हूं, सूर्य मैं हूं इन सब चीजो को सुनकर व्यक्ति यह सोचता कि कृष्ण यह कहते कि मैं सब कुछ हूं पर उसका अर्थ क्या है कि कृष्ण नें कहा।

हे प्रेमी! कृष्ण में कोई कहने वाला आया कहकर चला गया बस। दुनिया सारा जीवन यही देखती रही कि कृष्ण ने कहा। हे प्रेमी! कृष्ण ने नहीं कहा। कृष्ण जब अर्जुन को समझाते हैं तो कोई विराट है समझाने वाला। कृष्ण नहीं समझा रहे, कृष्ण तो वो छोटा सा माध्यम था जो उस समय लुप्त हो गया ज्यों ही अर्जुन का दिव्य नेत्र थोड़ी देर के लिए वहां से टूटा त्यूं सामने कृष्ण नज़र आये। पहले भी कृष्ण नजर आये बाद में भी आये बीच में न कृष्ण हैं न अर्जुन है। वहां पर तो परमात्मा कृष्ण के व अर्जुन के माध्यम से सारी प्रकृति को समझा गये। जो जानना चाहता था उसे समझा गये कि भई मैं हूं मैं हर जगह व्यापत हूं। सन्देश तो उन्होंने यह दिया हे प्रेमी! ऐसी Duality के वचन गुरू नानक साहिब ने ये कहे:—

गुरू की मूर्त मन में ध्यान

सुनने वाला सोचता है अच्छा अब जो गुरू महाराज दिखते हैं चमड़ा है बस यही है। ध्यान करो वो सारा जीवन उधऱ को ही हो गया। हे प्रेमी! गुरू महाराज की मूर्त को कहा गया अकाल मूर्त अकाल मूर्त का अर्थ जो कभी खत्म न हो। गुरू महाराज ने किसी मां के गर्भ से जन्म लिया था। कभी चल बसेंगे जो पहले महांपुरूष हुए कभी आए कभी गए और आगे आएंगे चले जाएंगे, अकाल इनमें से कोई भी नहीं। अकाल वो है जिसका इन सब महांपुरूषों नें ज्ञान करवाया। हे प्रेमी! वो है गुरू की मूर्त उसको महांपुरूष कहते मन में ध्यान। ध्यान करे तो उसका फिर कई सज्जनों को प्रश्न आता कि यदि ध्यान ही गुरू है तो शरीर धारी गुरू का अर्थ क्या है ?

हे प्रेमी! उस ध्यान गुरू की समझ शरीर धारी गुरू के बिना आती नहीं। यह तेरे ताले की दो चाबियां हैं सदगुरू सिर पर हो ध्यान न करे तो भी ताला नहीं खुलता और ध्यान की तरफ को हो जाये शरीर धारी गुरू को न समझे तो भी ताला नहीं खुलता। यह उस ताले की दो चाबियां हैं कि दोनों लगेंगी तो ताला खुलेगा बस यह काम ऐसा है। शरीर धारी का भी उतना महत्व है, जितना ध्यान का पर केवल शरीर धारी का ही महत्व नहीं। ध्यान भी बराबर चाहिए। पर यदि कहे कि ध्यान ही है देहधारी गुरू नहीं। हे प्रेमी! तब तो सवाल ही नहीं तब तो समझ लेना कभी भी कुछ होने का है ही नहीं या प्रयास करके भी देख ले। न पहले हुआ न आगे होग।

गुरू की मूर्त मन में ध्यान,
गुरू के शब्द मंत्र मन मान।

हे प्रेमी! गुरू के शब्द क्या हैं जब शरीर धारी गुरू ने कुछ कहा वो वचन कानों में गये। कुछ गल्ती हमने करी। बाहर से गुरू महाराज जी ने समझाया ज्यों ही गुरू महाराज ने कुछ समझाया तो अन्दर उतरा जब अन्दर उतरा तो ध्यान में सुमिरण में चलकर प्रायश्चित हुआ, प्रार्थना हुई। जो हमने

बाहर से सुना था वो हैं ''देह धारी गुरू'' के शब्द। जो सुने हुए शब्द भीतर उतरे जब उन्होंने अन्दर से प्रार्थना कराई वो हैं ''ध्यान गुरू'' के शब्द तो महांपुरूष कहते कि दोनों को मंत्र मन मान। जो बाहर से सुना और जो भीतर से सुना वो कभी भी दो नहीं होंगे। कभी भी जीवन में मिलान करके देख लो अन्दर की आवाज और गुरू महाराज की आवाज यह कभी अलग अलग नहीं होगी। यह जब भी लाएंगे मोड़ कर एक टिकाने पर लाते हैं इसलिए गुरू महाराज के वचन हैं कि **गुरू के शब्द मंत्र मन मान** उनको ऐसे धारण करे जैसे हम मंत्र पकड़ते हैं। जैसे कोई सन्यासी हमारे कान में फूंक मार दे कि यह मंत्र जाप कर हम श्रद्धा से करते हैं किसी को बताते नहीं पर दृढ़ता से करते हैं।

ऐसे ही गुरू महारज कहते हैं कि गुरू के वचन को मंत्र की भांति ले जा **गुरू के चरण हृदय ले धार** हे प्रेमी! बाहर तो गुरू महाराज के चरण थे हमने देखे नमस्कार हुई सिर झुका पर एक है जिसे शास्त्रों ने कहा चरण कमल। चरण कमल का अर्थ कि वो चरण जो उस कमल की भांति हैं जो पानी में डूबता ही नहीं क्योंकि कमल का फूल है पानी कितना बढ़े वो पानी के ऊपर ऐसे तैरेगा। डूबेगा भी नहीं ऊपर जाएगा भी नहीं बस वहीं टिका है। ऐसे ही चरण कमल का अर्थ जो संधि में हैं दुनिया से अलग भी नहीं दुनिया के बीच में भी नहीं अलग हों तो तूम्हारी पकड़ में न आयें। बीच में मिक्स हो जायें तो तुम्हारे जैसे ही हैं। इसलिए वो संधि में हैं। संधि का अर्थ होता न ऊपर न नीचे सम।

जिन्होंने कमल का फूल कभी देखा हो, जहां तक पानी का स्तर हो कमल उसके साथ ऐसे ऐसे लगता जैसे तैर रहा हो। बिलकुल ऐसे है पानी बढ़ा दो तो नाल उसकी और ऊंची हो जाती। जैसे कभी बारिशें पड़ जाएं कुछ हो जाए तो ऐसे पूरी नाल ऊपर की और जाती क्योंकि उसने रहना पानी के साथ साथ है और यह भी नहीं कि नाल इतनी ऊंची चली जाए कि कमल ऊपर अलग दिखे न। न यह है कि डूब जाए उसने उसके बराबर तल पर चले रहना पानी बढ़ता रहे घटे कोई फर्क नहीं महांपुरूष वहां से उदाहरण लेते हैं कि यह चरण भी उन कमलों की भांति हैं। दूसरी चीज होती है जिसे हम कहते हैं संध्या काल। संध्या काल का अर्थ है दिन खत्म होने को रात आने को पर न दिन है न रात है आधा सूर्य डूब गया आधा बाहर है। उसे कहा जाता संध्या काल।

संध्या मतलब बीच का समय हे प्रेमी! गुरू महाराज के चरण उस संधि की तरह हैं जिसे चरणों की समझ आ गयी उसकी संध्या हो जाती, उसी समय संध्या हो गई। पुजारी यह कहते हैं कि आज आरती की घंटी 7 बजे बजेगी आज आरती की घंटी 9 बजे बजेगी, आज 5 बजे बजेगी। आज संध्या इतने बजे है और हे प्रेमी! सही संध्या उस दिन है जिस दिन चरणों की समझ आ गई क्योंकि चरण ही संध्या का सबसे बड़ा प्रतीक हैं तो गुरू नानक साहिब ने कहा **गुरू के चरण हृदय लै धार** कि गुरू महाराज के चरणों को हृदय में आश्रय दे बाहर से आश्रय ऐसे है जो चरण देखे थे उनके भीतर उनमें श्रद्धा करके सुमिरण का पक्का हो गया। भीतर चरण वो हैं हे प्रेमी! जिसमें सुमिरण करते करते उतरना है। चरणों की एक दूसरी मिसाल समझ लेना रामायण में तुलसीदास जी ने चरणों की महिमा के बारे में कुछ शब्द कहे:—

श्री गुरू पद नख मणि गण ज्योति।
सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती।

तुलसी दास कहते हैं कि गुरू महाराज के चरण कमलों के भी नाखून को ध्यान में लेते हुए एकाग्र हो जाए कैसे—मणि गण ज्योति उनकी चित्त

में गणना ऐसे करे जैसे मणि हो। जैसे मणि का उन्होंने दो तरह का अर्थ लिया। एक धन, एक प्रकाश कि यदि हमें कहीं मणि दिख जाये मणि प्राप्त हो जाए तो हम बड़े गौर से उसे देखते हैं और सम्भालते हैं। कहीं काम पर चले जाएं तो भी चित्त यहीं कि कहीं कोई मणि उठाकर न ले जाये क्योंकि यहां मणि वहां प्रकाश तो खत्म होता ही नहीं स्वाभिक प्रकाश होता। धन की कमी नहीं आती। तो मणि को हम प्रकाश की दृष्टि से भी देखते हैं और धन की दृष्टि से भी देखते हैं।

तो तुलसी दास कहते कि गुरू महाराज के चरण कमलों के नाखून। क्योंकि गुरू महाराज को देखना तूलसी दास कहते यह भी सम्भव है। गुरू महाराज में भी उनके चरणों को देखना यह भी सम्भव है चरणों में भी नाखुन को देखना यह कहते बारीकी दृष्टि का काम है कि उनके चरणों के नाखून को भी ध्यान में लेते हुए ''**मणि गण ज्योति**'' मणि की भांति उनकी गणना चित्त में ले ''**सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती**'' यदि ऐसी दृष्टि रखकर सुमिरण करे तो कहते दिव्य दृष्टि भीतर पैदा होती। अब हे प्रेमी! इसका कुल अर्थ क्या है इसका कुल अर्थ यह है कि हम ध्यान की अवस्था में ऐसे उतरे जैसे हम बारीक चीज को गौर से देखते हैं और तुम ध्यान में तकरीबन-तकरीवन ऐसे उतरते हो जैसे सोना हो, गर्दन उधर को लुटकी कोई पता नहीं। पीछे को लुढ़क गई कि आगे को। आगे टकरें मारें एक दूसरे से होश ही नहीं कहां बैठे हैं क्या बेच रहे क्या खरीद रहे। कहीं बैठकर घोड़ों का व्यापार हो रहा। कहीं दालें बेची जा रहीं। कहीं लोगों से पैसे लिए जा रहे। हे प्रेमी! यह है क्या? यह ध्यान नहीं।

तुलसी दास चरणों के माध्यम से सिर्फ एक कला एक Art दे रहे हैं कि ध्यान को कैसे समझें वो कहते कि जैसे हम किसी उत्तम अच्छी कीमती चीज़ को ध्यान से देखते हैं ऐसे ही गुरू महाराज के चरणों में भी एकाग्र दृष्टि हो। यदि ऐसी दृष्टि ध्यान में ले जायें तो चलकर आगे कहीं दिव्य दृष्टि पैदा होती कहने का अर्थ कि ध्यान एकाग्र कैसे हो ध्यान में यह नही ंकि चित्त कभी इधर को है कभी उधर को उसे गुरू नानक साहिब कहते:-

गुरू के चरण हृदय लै धार।
गुरू पारब्रह्म सदा नमस्कार।

गुरू पारब्रह्म अर्थात कि गुरू महाराज स्वयमेव पारब्रह्म हैं परमात्म स्वरूप हैं। गुरू महाराज वो हस्ती शक्ति हैं जिसने तुझे तेरे भीतर का पारब्रह्म जना देना। किसी प्रेमी ने गुरू महाराज को प्रश्न किया कहता जी क्या मुझे कोई परमात्मा दिखा सकता है गुरू महाराज कहते नहीं। कहता जी मैंने सुना है कि आप दिखाते हैं। गुरू महाराज कहते न—मैं भी नहीं। कोई भी नहीं। कहता जी क्यों? गुरू महाराज कहते यह चीज ऐसी है कि यदि मैं तुझे पूछूं कि तूं अपने बच्चे पैदा होने की खुशी मुझे दिखा सकता है कहता मैं समझा नहीं। गुरू महाराज कहते जिस दिन तेरे संतान हुई थी। कितना प्रसन्न हुआ था? कहता जी बहुत, खुशिया मनाईं, शराब बांटी, यही किया वो किया। कहते कितना खुश था? कहता जी बहुत ज्यादा। बस कहते दिखा वो खुशी कैसी है। कहता जी अब दिखने-दिखाने का तो नहीं अनुभव है। मेरी संतान थी तो इसलिए मैं खुश हुआ। बस कहते भाई जिसने पाया यह उसकी खुशी है। फिर कहता जी महांपुरूषों ने तो कहा देखना। कहते बिलकुल। बिलकुल ठीक कहा देखने का अर्थ तो महांपुरूषों की दृष्टि से है। वो कैसी दृष्टि से है।

जैसे गांधी जैसे व्यक्ति ने एक बात कह दी कि देश के लिए मेरा एक-एक कतरा भी बह जाए

मुझे तो भी समस्या नहीं। पर यह गांधी की दृष्टि है। दूसरी तरफ कोई एक किराये का देशभक्त हो। मान लो फौजी हो पैसे बगैरह देकर भर्ती हो गया। उसे बार्डर पर खड़ा कर दिया उसे कोई कहे जान दे दे। वो कहता क्यों जो रिश्वत दी थी पूरी नहीं करनी। अब हे प्रेमी! यह किराये की देशभक्ति है। जज़्बा अलग चीज़, थोपना अलग चीज़। ऐसे ही जिन्होंने जज़्बे से गुरू भक्ति करी वो अलग हैं कि हे परमात्मा! उतरना ही है और वो उतरे भी। एक थोपा हुआ था कि यदि यह चलेगा तो मैं चलूं यह थोपा हुआ है यदि यही नहीं मानेंगे तो हम नहीं मानेंगे।

हे प्रेमी! थोपी हुई भक्ति से नहीं। जज्बे का अर्थ है कि भीतर है कोई करे न करे हमें क्या लेना। कोई चले न चले किसी से कोई अर्थ नहीं तो ध्यान रखना परमात्मा का भजन जज़्बे से है और जिनको महांपुरूषों ने कहा देखा उनके जज़्बे उनकी श्रद्धा का वचन है। बुल्लेशाह को किसी ने प्रश्न किया था कि क्या आपने उस खुदा को जान लिया, देख लिया। कहते हां देख लिया। कैसा है ? बुल्ले शाह कहते तेरे जैसा। कहता मेरे जैसा मैं ही हूं। कहते बिलकुल तू ंही है कोई शक नहीं। किसी और ने पूछा कहते तेरे जैसा क्योंकि हे प्रेमी! जब जान लिया तब तर्क के लिए, झगड़े के लिए तो समय ही नहीं। जो है बस ठीक ही ठीक है।

जो तिस भावे साई भलिकार

किसी ने कहा मेरे जैसा कहते बिलकुल तुम ही हो। जो हो तुम ही हो दूसरा नहीं। क्योंकि तर्क का तो सवाल ही नहीं झगड़ा तो है ही नहीं जिसने पूछा कहते कि तेरे जैसा। तुम हो तेरे जैसा। तो हे प्रेमी! अब जिनके लिए वचन थे उन्होंने दरअसल क्या देखा ? हे प्रेमी उन्होंने इन आंखो से कुछ नहीं देखा उन्होंने अनुभव की दृष्टि से देखा। उन्होंने अनुभव किया अपने भीतर कुछ पाया कुछ जांचा कुछ अनुभव किया।

यह देखना कुछ ऐसा होता है संसारिक दृष्टि से कहूं जिन दिनों में बच्चे नया-नया साईकिल चलाना सीखें। रोड़ चाहे पच्चास फुट चौड़ा हो बच्चा साईकिल चलाएगा यदि कहीं किनारे पत्थर हो बच्चा उसमें जाकर टकराएगा। सीधा साईकिल उधर जाता यह किसी लड़के ने पूछा भी था। कहता जब भी हम साईकिल चलाएं उधऱ को चला जाता। हे प्रेमी! तब होता क्या है कभी तुम देखना जब भी कोई साईकिल चलाना सीखे वो आगे नहीं देखता पैडल देखता पहले। हमेशा ही नया-नया किसी को साईकिल चलाने को कहो हैंडल ऐसे पकड़ लेगा नीचे पैडल देखेगा क्योंकि मानसिक संतुलन शरीर का ऐसा है आदमी साईकिल चलाते से पहले कहो उसे आगे का पता नहीं वो कहता जो मैं कर रहां उसको देखूं। तो सिखाने वाला कहता यार पैड़ल अपने आप चलेंगे तूं आगे देख इसलिए फिर वो किसी उतराई पर ले जाता। उसे उतराई के ऊपर बिठाकर उसे कहता तू पैडल मत मारना आगे देखना। क्योंकि यदि Plain में चलाए वो फिर पैडल देखेगा। हे प्रेमी! यह मनो विज्ञान है और वही आदमी जिस दिन Trained हो जाये अच्छा चलाना सीख जाए तो वो एक हाथ से कोई रेडियो पकड़ लेगा, गाने सुनता जाए दूसरे हाथ से सामान पकड़ा है। हैंडल छोड़ दिया साईकिल फिर भी चलता है, तो आते जाते लोग कहते कि भाई कहीं गिर मत जाना रोड़ को देखते हुए चलाओ कहता नहीं मैं देख रहा हूं अब वो बातें किसी से करता है, ध्यान कहीं है, गाने सुन रहा है।

हे प्रेमी! किस दृष्टि से वो रोड़ को देखता है आंखे तो उसकी कहीं और हैं कभी स्कूल के बच्चे—आप देखो जो नया-नया साईकिल सिखते हैं फुदकते हैं वो दो-दो तीन-तीन इकट्ठे जाएंगे

हैंडल छोड़ देंगे एक दूसरे के मुंह को देखकर बातें करेंगे साईकिल चलता है ईधऱ को होंगे तो तीनों इकट्ठे होंगे उधर को होंगे तो तीनों होंगे। अब हम यह कहते हैं कि रोड़ को देख कर चलाओ वो कहते हम देख रहे हैं। अब सवाल है किस दृष्टि से देखते हैं ?

दूसरी बात राजस्थान में कभी जाओ तो वहां पर आज भी कुछ जगह ऐसी हैं जहां पर पानी नहीं है तो वहां की जो कुछ प्रजातियां हैं वो लोग बड़ी दूर-दूर से पानी लाते हैं उन्होंने मटके ले लेने नीचे एक मटका उसके ऊपर दूसरा, तीसरा,चौथा ऐसे दस-दस मटके वो एक-एक बार में लेकर आती हैं उन्हें पनहारिन कहा जाता है पानी ढोने वाले। तो वो जब इकट्ठी चलती हैं तो दस-दस बीस-बीस के ग्रुप में चलती हैं और एक-एक ने दस-दस मटकीयां उठा लेनी पानी की औऱ बातें करेंगे आपस में। बातें करेंगी हंसेगी, किसी का शोक मना लेंगी सब कुछ करेंगी पानी सिर पर है। हे प्रेमी ! तूम्हें कोई नये-नये कहा जाये एक घड़ा उठाओ तुमसे वो भी गिर जाएगा। उन्होंने हाथ नहीं लगाना रखे हैं लेकर जा रहे हैं बस। अब यदि उन्हें कोई कहे कि तुमने मटके संभाले हैं बताओ कैसे पकड़े हैं। हे प्रेमी ! तुम बता दो कैसे पकड़े हैं ? तो सवाल यह है कि बातें करती हैं चित्त घड़ों में है। कबीर कहते:—

सुमिरण की सुध ज्यों करो, ज्यों गागर पनिहार।

कहते जैसे उस पनहारिण ने गागर पकड़ रखी हैं बातें करेंगी हंसेगी खेलेंगी करते करते चित्त गागर पर गागर गागर में टिका है कहीं गिर न जाए ऐसे ही जो साईकिल चला रहा। कबीर के समय पर नहीं थे नहीं तो कह देते कि सुमिरण की सुध ज्यों करो, ज्यों साईकिल चलाने वाला। तो होता क्या है कि जो साईकिल चलाता है हाथ छोड़कर उसका ध्यान सड़क पर है। वो अपनी दृष्टि से कहता कि मैं देख रहा हूं। पनिहारण को कोई दूर जाता व्यक्ति कहता कि गागर को पकड़ ले गिर जाएगी। कहती नहीं मैंने पकड़ा हुआ है।

हे प्रेमी ! जैसे उसने पकड़ा जैसे ही रोड़ को देखता सड़क को देखता, ऐसे ही ज्ञानवान परमात्मा को देखता है। अब यह बताओ तू इसमें से समझा क्या। देखने का अर्थ सिर्फ आंखे खोल कर नहीं। देखने का अर्थ ध्यान दृष्टि है। सिर्फ ध्यान से बांध लेना किसी चीज़ को समझ लेना टिका लेना उसको महांपुरूषों ने कहा देखना और वहां पर यह नहीं कि आंखे खोल कर ऐसे आंखे फाड़ कर बैठ गये कुछ देखने नहीं। इसलिए भगवान गीता में यह कहते हैं:—

दिव्यं ददामि ते चक्षु।

हे अर्जुन ! तू मुझे अपनी इन दो प्राकृतिक नेत्रों से नहीं देख सकता। इन दोनों आंखों से कहते तू मुझे नहीं देख सकता। मैं तुझे दिव्य नेत्र देता हूं। अब दिव्य नेत्र का अर्थ यह है। ध्यान दृष्टि। किसी चीज को ध्यान से एकाग्रता से बांध लेना। औऱ हे प्रेमी यह ध्यान दृष्टि बिना गुरू महाराज की कृपा के नहीं आती। जिन्होंने बहुत बहुत प्रयास किया बहुत कुछ भी किया उन्हें भी अंततः गुरू कृपा की जरूरत पड़ी। बहुत कुछ करने के बाबजूद भी।

जैसे राजा धर्म दास यह इसे धनी धर्म दास भी कहा जाता। कभी गुरू महाराज ने एक दृश्य पेश किया। दृश्य क्या था कि गुरू महाराज जैसे खुद लड़कियों के कपड़े पहने और हाथ में मदिरा की मश्क में आपने देखा होगा कि मशकें चलती थीं। एक लम्बी मशक होती थी बकरे के चमड़े से बनती थी। एक छोटी होती थी जैसे सुराही जैसी चमड़े की। जैसे बोतल आजकल होती ऐसी सिलाई कर देते थे चमड़े की उन दिनों। उनमें जैसे शराब

डालकर पी जाती तो एक तो गुरू महाराज ने वो पकड़ी बीच में पानी है तो जैसे नशे में जैसे धुत होते हैं ऐसे चले जा रहे औऱ साथ में कोई लड़कियां थी या माताएं कहूं साथ में। एक दो इधऱ उधऱ वो ले लीं चले जा रहे हैं ।

धर्म दास जिस जगह रहता था उस महल मुनारी के ऊपर खड़ा होकर देख रहा था। गुरू महाराज उसके सामने घर से ऐसे निकल गए जब निकले उसने दृश्य देखा हिल गया हिल गया अब जिन्होंने कहना था उन्होंने तो कसर पहले न रखी थी। वो तो तैयार बैठे थे। कहते हैं तेरा गुरू शराबी। बस इतने शब्द थे जिन्होंने धर्म दास हिल गया हिल गया और चित्त में जैसे कह लो कई प्रश्न आ गये संश्य गड़बड़ चित्त हिल गया। अब सोचा कि भजन पर बैठूं, भजन तो अब क्या ही बने जब बैठे बस वही कुरमुर-कुरमुर। जब किसी तरफ से स्थिरता न बनी अंतत: समय पाकर गुरू महाराज के दरबार में पहुंचा।

इधर गुरू महाराज ने पहले ही कह रखा था कि धर्म दास आ जाए तो अंदर मत आने देना। बिलकुल नहीं। वही हुआ भी जैसे ही वो आए कहते जी आज्ञा नहीं है आपको। जब कहा आज्ञा नहीं। अब धर्म दास पछताए। कहता जी एक बार मेरा सन्देश गुरू महाराज को दे दो कि जैसे मर्जी मुझे क्षमा करो। गुरू महाराज ने एक बार तो नहीं सुना। दूसरी बार कहा नहीं सुना। जब बार-बार किसी ने सन्देश दिया कहता जी वो मान नहीं रहा वो कहता क्षमा करो। अच्छा कहते ठीक है जाओ कहते उसे कहो मुंह काला कर गले में जूते की माला डाल गधे पर उलटा बैठ कर नगर में घूम कर आ। तो जब धर्म दास ने यह भी किया ऐसी कार्रवाई करी तो अन्दर पहुंचा नमस्कार हुई। कहता गुरू महाराज बहुत बड़ी गल्ती हो गयी।

तो गुरू महाराज के वचन थे कि **धर्म दास फर्क इतना था कि अभी मुंह काला हुआ एकाध दिन में हो गया काम। चौरासी में पता नहीं फिर मुंह काला ही काला। कभी कोई योनि कभी कोई, कभी कोई। फिर वो होती हैं प्रायश्चित की योनियां कि किये जाओ लगे रहो लाईन में फिर। पता नहीं बारी मिले न मिले।**

कभी ऐसा दृश्य यहां भी हुआ था। सत्संग का दिना गुरू महाराज के समय की बात है सांप काफी बड़ा लम्बा मोटा सांप बैठा था सत्संग चल रहा ऐसे साईड-साईड से आया गुरू महाराज ने चलते सत्संग में छड़ी उठाई दिखाई ऐसे अच्छा फिर नीचता। पहला पता नहीं क्या-क्या कर रहा चल उठ भाग। वो बैठा रहा तो गुरू महाराज कहते अच्छा चल कोई बात नहीं दोबारा मत करना बस इतना कहा ऐसे परनाला सा बना था नीचे को गया। थोड़ी देर बाद देखा वहां मरा पड़ा हुआ। सत्संग खत्म हुआ बस।

यही बिलकुल दृष्य कभी दादा गुरू का भी बताया था। सत्संग चल रहा उन दिनों में होता क्या था जैसे सीढ़ियां बनाई ईंटे लगा-लगा कर सीढ़ियां बनाईं सामने से थी। ज्यों ही गुरू महाराज सभा में से होकर आसन पर बैठे सत्संग शुरू हुआ। पीछे-पीछे वो भी आ गया। अब प्रेमी सारे ध्यानमग्न किसी को कोई सुध नहीं। वो भी आया आकर बिलकुल चरणों के पास पहले ऐसे किया। फिर ऐसे फण नीचे को कर दिया, नमस्कार करी। वो कुंडली सी मारकर बैठ गया जैसे किसी को रजाई देकर झुंगड़ बाटा बनाया हो। ऐसे बैठा बस मजे में तो प्रेमी हिलजुल करें कहते कि जी सांप इशारे करें। गुरू महाराज ने डांटा कहते चुप। किसी ने कुछ नहीं बोलना यह कहते नीच मति है यह सुधरेगा नहीं **क्योंकि कहते मूर्ख का, सांप का और**

कुत्ते का झुकना वैसे भी गल्त होता। यह काटते हैं। जब कहा फिर भी हिला बिल्कुल भी नहीं वो भी। जैसे सुन रहा हो चुप शांत। तो गुरू महाराज ने फिर कोई डंडा इत्यादि उठाया ऐसे बजाया जोर से चल कहते जा अभी कट गया दोबारा ऐसी गल्ती मत करना। बिलकुल दृश्य हुआ ऐसे उतरा उतर कर कहां किनारे को गया खेत से थे मरा पड़ा। अब हे प्रेमी! फिर होता क्या अभी के बीज तब के वृक्ष हैं।

तो कबीर साहिब ने समझाया कहते धर्म दास यह बीज था जो तूने बो लिया अब काटने के लिए वृक्ष हैं और जब वृक्ष काटने की बारी आती तब हम एक प्रश्न करते हैं। हे परमात्मा! मैं तेरा क्या बगाडेया। तो हे प्रेमी! परमात्मा का कोई बिगाड़ सकता भी नहीं। बिगाड़ते तो हम एक दूसरे का ही हैं आपस में। ईश्वर का किसी ने क्या बिगाड़ लेना और बिगाड़ोगे तुम उसका जो तुम्हारे हाथ लग जाए। परमात्मा हाथ नहीं आता। यह तो पारा है जितना इसको मुट्ठी में लेने की कोशिश करेंगे उतने हिस्से होकर खिलर जाएगा यह। हाथ में नहीं आना इसने। इसे समझदार लोग घेरकर किसी पदार्थ पर तो ले लेते, हाथ में नहीं आता। ईश्वर तो पारे से भी सूक्ष्म कया पकड़ोगे। हे प्रेमी! जिसने हवा बना दी वो हवा से तो सूक्ष्म ही होगा। हवा को क्या पकड़ लिया जो परमात्मा पकड़ना इसलिए महांपुरूषों ने फिर समझाया कहते यह अबका बीज था तब के वृक्ष थे। अभी सस्ते में कट गया पता नहीं क्या क्या घटनाएं घटनी थी।

यही दृश्य था बुल्लेशाह के साथ पर यह कुल मिलाकर बातें किसलिए थी कि एक बात समझ में आ जाए **''गुरू पारब्रह्म सदा नमस्कार''**। हे प्रेमी! परब्रह्म कह तो लेता उपर से कि गुरू महाराज पारब्रह्म हैं पर पकड़ा नहीं। अब ऊपर से जितना मर्जी कहे जाओ कुछ नहीं हो जाता। ऊपर से तो ऐसे होता है कि जैसे जीवन में राजनीती का नशा था अपने बेटे का नाम रख लिया मोदी। आ भई मोदी अब यह भुस तो पूरा हो जाएगा कि हम भी प्रधानमंत्री के पिता पर कौन सा प्रधानमंत्री जो घर में ही पैदा हुआ हो देसी। ऐसे किसी का नाम रख लो राष्ट्रपति-अबे ओ राष्ट्रपति साहिव किसी का नाम रख लो-मुख्यमंत्री होर जी मुखमंत्री जी। अब हे प्रेमी! यह सवाल वही है Feeling लेनी। क्या करते हैं? जी Feeling लेते हैं। हे प्रेमी! Feeling तो किसी में से ले ले। ऐसे ही लोग ग्रंथों में से Feeling लेते हैं। सब धर्म यह कहते हैं कि ग्रंथ गुरू है। क्यों? क्योंकि ग्रंथों से Feeling लेते हैं। गुरू सही अर्थों में चाहते नहीं। Feeling लेते हैं कि गुजारा भी हो जाए गले भी न पड़ जाए क्योंकि पता है जीता जागता गुरू गले पड़ जाए। गले पड़ा ढ़ोल है फिर बजाना पड़ेगा आज्ञा माननी पड़ेगी।

ग्रंथ जो हैं ग्रंथ है बच्चे वाली ढोलकी। कहने को घर में रखी भी है हम बजाते भी नहीं। जैसे किसी ने पुलिस में शिकायत कर दी कि जी इस मोहल्ले में से आवाजे आती हैं पता नहीं कौन है जो बड़ा तंग करता हैं ऊंचे-ऊंचे स्वर में ढ़ोलकी बजती है। जांच पड़ताल हुई तफतीश हुई अच्छी पॉवर पहुंच वाला आदमी था चलो तालाशी हो गयी घरों की। अब तलाशी हुई तो जिस घर में से निकली वो निकली बच्चे वाली ढोलकी इतनी सी। अब पुलिस कहे कि ढोलकी तो है पर छोटी है कहता नहीं जी आवाज़ तो बड़े वाली की आती। जो व्यान दिये वो टैली न करें जो प्राप्ति हुई सबूत मिले वो छोटी है। अब क्यों? समस्या बीच की यह थी कि जो बजाने वाला बच्चा था वो थोड़ा बड़ा उसको आदत थी धगड़-धगड़ मारने की।

ढोलकी बजाने की नहीं पीटने की आदत थी। ऐसे उल्टी खड़ी कर डगा-डगा डगा-डगा

रात को बजानी उसने। पूरा मोहल्ला तंग करना उसने। अब घर वाले इसमें से Feeling लेते हैं। कहने को हम सच्चे भी हैं। हमारे पास ढ़ोलकी है पर बजाते हम नही। हे प्रेमी! ग्रंथों से लोग धर्म, मजहब, पंथ, ज्ञानी, पाठी, गुरू यह Feeling लेते हैं। इसलिए कोई भी धर्म यह कहता है पुजारी समूह कहते हैं नहीं-नहीं गीता गुरू है। सिख धर्म में कट्टर लोग कहते हैं ग्रंथ साहिब गुरू है दूसरा नहीं। हे प्रेमी! दूसरे को तुम पकड़ोगे कैसे? Feeling ही नहीं ले सकोगे। ज्ञानवान कभी Feeling लेने नहीं देता। R.C.T करता। Feeling ली नहीं जाती मजा आता नहीं। जिसने गुरू ग्रंथ साहिब को पकड़ना वहां पर वचन हैं। जिसने गीता, रामायण कुरान को पकड़ना वहां वचन हैं।

एक आदमी हुआ उसका नाम बंर्टेड रसल। उस आदमी ने जो गुरू ग्रंथ साहिब के बारे में सुना इंगलिश में ट्रांसलेश्न पढ़ी। वो बड़ा प्रसन्न हुआ, प्रसन्न हुआ और उसने किसी को पूछा भी यह किसका ग्रंथ है। तो जबाव देने वाला कहता जी सिखों का। कहता नहीं, कहता ग्रंथ सिखों का नहीं है। सिख इस ग्रंथ के लिए बनाए गये हैं कि जो इसे समझ जाए वो सिख है।

हे प्रेमी! यह एक वैज्ञानिक, लेखक, गैर उपदेशी के वचन हैं। कहता यह सिखों के लिए नहीं है। जो इसे सीख जाए वो सिख है। कारण हे प्रेमी! केवल ग्रंथ साहिब नहीं किसी भी ग्रंथ का तत्व ले जा। जो ले गया वो सिख है। क्योंकि तत्व बिना महांपुरूष के मिलेगा नहीं, निचोड़ मिलेगा नहीं। रूमाले मिल सकते हैं लपेट कर गांठ दे दो। बस ठीक है बंधे हैं, रेश्मी हैं, सुनहरी हैं कोई फर्क नहीं पड़ता। तत्व की बात बिना भेदी के प्राप्त नहीं होती। इसलिए महांपुरूषों ने कहा कि सब बातें ठीक पर गुरू पूरे सदा नमस्कार। कि बिना गुरू महाराज के ग्रंथ खुलते नहीं, बिना गुरू महाराज के भेद नहीं खलता। वाणी तो कहता है:-

पूरे गुरू का सुन उपदेश,
पारब्रह्म निकट कर पेख।

कि भई बात तो ठीक है पूरे गुरू महाराज के वचन सुन पर पूरा मिले तो सुने। यहां मिल जाए कोई ढोलकी मास्टर, कोई तबला मास्टर वहां पर Feeling है, Feeling ले लो। Feeling ले लो कि हां जी बहुत अच्छा गा लिया सुरों में गा लिया। पर हे प्रेमी! अन्दर से कुछ नहीं मिलेगा। यहां पूरा होगा वहां वो अन्दर की बात समझाएगा तू अन्दर उतर।

तू अपनी संभाल तैनूं होर नाल की।
तूं गठड़ी सम्भाल तैनू चोर नाल की।

तत्ववेता महांपुरूष कहते हैं तूं नाम सम्भाल बाकी सब छोड़। सिर्फ नाम सम्भाल। तो यह जो महिमा थी हो तो बहुत लम्बी है, गुरू की मूर्त मन में ध्यान, गुरू के शब्द मंत्र मन मान। कभी किसी चर्चा मैं पूरी इस महिमा को लूंगा। अब अंतत: एक बात पर आता हूं। जिसे सार करके कहूं जो सारी बातों के बावजूद गुरू नानक साहिब ने एक बात कही सार हे प्रेमी! किसी भी महांपुरूष के वचन अष्टपदी, नौपदी, दशपदी जब भी कहीं खत्म होती है उसमें एक बात में कुल बातें कही जातीं अन्तिम वचन क्या थे

नानक गुरू पूरे सदा नमस्कार।।

बस कहते इसमें सारा कुछ आ गया क्योंकि जीवन में पूर्ण गुरू महाराज को एक नमस्कार ही नहीं हो पाती बाकी सब हो जाता। हमें कोई कहता सेवा भेंट करो, हम अपना बेच कर भी सेवा दे देते हैं। वो भी संभव पर नमस्कार हो जाए यह तरीका बहुत मुश्किल है क्योंकि जीवन में बहुत कम प्रेमी बहुत कम ऐसे भक्त हैं जिनकी नमस्कार हुई।

कभी इन्हीं सीढ़ियों में गुरू महाराज चढ़ रहे थे ऊपर जब जहां ऊपर पहुंचे तो नीचे हॉल में होकर आये थे प्रेमी नमस्कार कर रहे थे गुरू महाराज ऐसे उठ के आ गये। ऊपर आकर हंस रहे थे मैंने कह दिया वैसे मैंने कहा बेनती है कहते हां मैंने कहा अभी नमस्कार कर रहे थे। वो कहते बदमास हैं नमस्कार कोई भी नहीं करता। कहते कोई कर ही नहीं रहा था। नमस्कार सारे कहते ऐसे सिर मार रहे थे। ना कहते किसी ने करनी ही है तो फिर उस समय बताया कि जीवन में दो बार किसी ने नमस्कार करी। एक किसी प्रेमी की बताई और एक उस लड़की की जिसकी माहिलपुर की रहने वाली थी उसकी शादी थी। शादी कहीं बाहर हो रही थी, जैसे बारात आ गई। सब अपना गाजा बाजा बज रहा है। अन्दर वो गुरू महाराज तो शान्त थे तो कहते मैं जैसे पानी पीने के लिए उतरा सीढ़ियों से नीचे तो शांत थे बोलना तो था नहीं कहीं जाना नहीं था। प्रेमी भेजे हुए थे सत्संग भी हो गया सब कुछ हो गया। उस लड़की ने अन्दर बैठे-बैठे प्रणाम करी। अब क्या तो उसकी प्रार्थना रही होगी क्या नमस्कार थी कहते मेरे कदम रूक गये, बस! कहते यह दो नमस्कार हुईं जीवन में बाकी सब कहते सिर पटकाऊ हैं। आये सिर पटके ओ गये ओ गये बस कोई लेना देना नहीं नमस्कार करते-करते भी कहीं और समझोते होते हैं चित्त के। हे प्रेमी! यह महांपुरूषों का वचन है, तत्ववेता महांपुरूषों का निचोड़।

नानक गुरू पूरे सदा नमस्कार।

तूं कहते नमस्कार कर जा इतना ही बहुत है क्योंकि हे प्रेमी! जहां नमस्कार हो गयी, वहां कभी संश्य नहीं टिकता। वहां कभी गुरू महाराज के प्रति दुबिधा नहीं आती। यहां नमस्कार हो गयी वहां चित्त से कभी सत्संग नहीं जाता। यहां नमस्कार हो गयी वहां दर्शनों की भूख नहीं खत्म होती। यदि इनमें से कुछ भी उड़ा तो फिर नमस्कार नहीं और हे प्रेमी महांपुरूषों का तो वचन है

जां घट गुरू की भक्ति नहीं, संत नहीं महमान।

जब भीतर भक्ति है ही नहीं, सन्त मेहमान की तरह है नहीं फिर तां घर यम डेरा किया जीवत ही शमशान। फिर वो कहते शमशान की भांति। शमशान में और उस घट में, हृदय में कोई अन्तर नहीं, क्योंकि वो जरा जीते जी मरा है। शमशान में वैसे ही मरे हुए जाते हैं। पर नमस्कार अपने आप में कुछ है पर यह जरूरी नहीं कि नमस्कार सनमुख होकर की जाती। हे प्रेमी! नमस्कार का तो अर्थ है ज्यों ही याद आयी त्यों ही चित्त झुक गया। जिसकी नमस्कार हो गयी उसके भीतर से धोखा खत्म हो गया। जैसे मैंने पिछली बार भी कहा था:—

मन दा धोखा ता लहे जे अर्ज करी अरदास।।

गुरू महाराज के वचन हैं कहते कि मन में जितनी प्रकार के धोखे, संश्य, प्रश्न, किन्तू-प्रन्तू यह सब जाते लगे। धोखे का अर्थ कि जो हम कहें उसके ऊपर न चलें कुछ और हो जाएं यह सारी कहते स्थितियां समाप्त हो जातीं।

जे अर्ज करी अरदास।।

भीतर से बिनती हो जाए, और हे प्रेमी! बिनती होती तब है कभी भी ध्यान रखना तूं औऱ गुरू महाराज बस दो कोई बीच में न आए।

तूं अपनी संभाल तैनूं होर नाल की।

किसे और को किसी भी दूसरे को बीच में लाना नहीं जब तेरी दृष्टि में गुरू महाराज के बीच में कुछ औऱ आ गया गुरू महाराज ओझल हुए बस काम खराब पर यह ओझल होना कैसा है।

इधर पास में गांव है वहां पर एक जगह भी बनी है। उस जगह में यह प्रताप है वैसे तो भूतों का ही डेरा है वहां पर सूर्यास्त के बाद और सूर्यास्त

से पहले कोई वहां पर जा नहीं सकता। यदी कोई जाए तो इल वला आवाजें औऱ पुट्ठ सिद्ध कई कुछ है वैसे तो कहा जाता कि कोई जीवित निकलता नहीं पर ऐसे कोई जाट था। जैसे अच्छा तगड़ा, शारीरिक कद काठी का वो अकड़ गया कहता मैं जाऊंगा। अब यह पुराने बुजुर्ग कहा करते थे कि घोड़े के और बैल के नज़दीक कोई भूत प्रेत नहीं आता। उसने भी यह सुन लिया कि घोड़ा ले चलते हैं कौन आएगा। घोड़ा ले गया जैसे ही सूर्यास्त हुआ तो अन्दर चला गया अन्दर जाकर बैठ गया घोड़ा अपने पास बांध लिया। पहले तो धीरे-धीरे शुरू हुआ, ऐसे टिक-टिक खड़का कुछ हुआ। हां कौन है, थोड़ा और हो गया। बस ज्यों-ज्यों अर्ध रात्री आई त्यों-त्यों कारोबार बढ़ता चला गया। खड़का छिड़-छिड़! और बढ़ने लगी। कभी कुछ उड़ता कुछ लाईट कभी कुछ कभी कुछ।

ऐसी अवस्था आ गई कि उन्होंने गालियां देनी शुरू कर दी। गालियां दी बहुत गालियां दी जैसे कह लो भूतों ने गालियां दी चला जा कहते जहां से नहीं तो मारा जाएगा। वो कहता जा-जा मैं नहीं डरता। इधर इसके अहंकार भरे वचन उधऱ वो चीजो के। ऐसे चलता रहा द्वंद बड़ी देर तक। अच्छा! तो उन्होंने आवाज़ दी कहते यदि ताकत है तो घोडे की रस्सी छोड़। इसने भी हेकड़ी में आकर रस्सी छोड़ दी। बस जैसे ही लगाम छूटी वैसे ही उतने ही घोड़े कई तरफ खड़े हो गये। अब यह न समझ आए कि जिसको पकड़े वो नकली है नहीं। अपने वाला भी लुप्त बाकी भी लुप्त। जिसको हाथ लगाये बस वो है नहीं। दिखता है, है नहीं। बस फिर बड़ी बुरी हालत हुई। बच तो गया था पर जब बाहर निकला पर बड़ी बुरी हालत, मनोरोगी हो गया। कोई तेज चीज़ गुजर जाए तो चीखने चिल्लाने शुरू कर दे। इतना डराया इतना डराया, उन्होंने तो कम डराया पर अपने डर से मर गया बस।

तो हे प्रेमी जैसे घोड़ा लुप्त हुआ ऐसे ही सब कुछ भीतर से लुप्त हो जाता जब तेरे और गुरू महाराज के बीच में कोई आ गया। तूने अपना असली घोड़ा छोड़ा बस फिर नकली-नकली हैं सारे। इसलिए तूं अपना टिकाना मत छोड़। हे प्रेमी! जो होता हो तूं एक गुरू महाराज को देख सिर्फ।

नानक गुरू पूरे सदा नमस्कार

यह उनका अंतिम वचन है। यदि तेरे पास एक नमस्कार है तो हे प्रेमी! सारा कुछ ठीक। एके के सिवाय कुछ है तो ध्यान रखना जीवन में फिर वही चौरासी है अभी कुछ और अभी कुछ औऱ अभी और। हे प्रेमी! फिर झुकने का मौका हर चौरासी में मिलता। पर वो मजा झुकने का तब नहीं जो अब इस मानव शरीर में है। इसलिए अभी जो जीवन है अभी स्वांस हैं उनको संभाल। एक चीज़ को हमेशा याद रख ज्ञान कराया था गुरू महाराज ने, ज्ञान कराया पूर्ण उसमें कमी नहीं रखी। उसमें यदि पूर्ण है तो हे प्रेमी! उस पूर्ण को समझ। किसी से कुछ लेना देना नहीं।

संग सखा सब तज गये, कोई न निभियो साथ।

जिस दिन तू अपने कल्याण के लिए आया तो गुरू महाराज ने किसी से ठप्पा नहीं लगवाया। किसी की गारंटी नहीं ली कि कोई तेरी गारंटी ले तो ज्ञान कराना किसी ने लिख कर नहीं दिया तेरी भावना ती तुझे ज्ञान कराया हे प्रेमी तूं केवल गुरू महाराज को देख। एक गुरू महाराज को देखोगे तो ठीक और कई कुछ देखा बीच में कुछ भी आ गया तो हे प्रेमी फिर ज्ञान नहीं रहेगा। तो सारा कुछ लुप्त इसलिए ध्यान रखना एक अपनी एक टक श्रद्धा एक विश्वास एक गुरूभक्ति को आगे रख कर चल अपने सुमिरण का, अपने ध्यान का, नियम का पक्का रह। जो कोई कहता कहने दे हे प्रेमी यहां दुनिया है गुरू

महाराज को कई कहने वाले थे उनमें से आधे न रहे जो हैं धीरे-धीरे चल बसेंगे। यहां समय किसी का नहीं जो आए हैं अपने लिए करो यहां कोई किसी का नहीं।

संग सखा सब तज गये कोई न निभियो साथ।
कहो नानक इस बिपत में एक टेक रघुनाथ।।

हे प्रेमी! जो बिपत आयेगी उसके लिए एक विश्वास एक टक रह। एक टक का अर्थ है जो कभी डोले नहीं कभी न डोले कुछ हो जाए जिसको एक गुरू महाराज का भरोसा है उसने डोलना नहीं और यदि किसी और का भरोसा लिया तो डोले इसलिए एक टक एक श्रद्धा पर रहना होगा।

तत् सत् हरि ओम्

सत्संग सूचना पृष्ठ 24 पर देखें

ਕਿੱਸਾ ਪੂਰਨ ਭਗਤ

(*ਜਨਮ ਲੈਣਾ ਪੂਰਨ ਦਾ ਰਾਜਾ ਸਲਵਾਨ ਦੇ ਘਰ*)

ਮੁਦੱਤ ਗੁਜ਼ਰ ਗਈ ਜਦ ਉਸ ਨੂੰ, ਇਕ ਦਿਨ ਮਹਲੀਂ ਸੋਇਆ ਨੀਂਦ ਵਗੋਯਾ।
ਖਬਰ ਅਚਾਨਕ ਦਿੱਤੀ ਦਾਈਆਂ, ਲੜਕਾ ਤੈਂ ਘਰ ਹੋਇਆ, ਸ਼ਾਮ ਸਲੋਇਆ.
ਸ਼ੁਭ ਵੇਲੇ ਸ਼ੁਭ ਘੜੀ ਮਹੂਰਤ, ਬੀਜ ਧਰਮ ਦਾ ਬੋਇਆ, ਬਰਤ ਦਬੋਇਆ।
ਕਾਲੀਦਾਸਾ ਸਮਾਂ ਪਾਇਕੇ, ਹੁਣ ਓਹ ਉਗ ਖਲੋਇਆ, ਨਵਾਂ ਨਰੋਇਆ।
ਮਾਉਂ ਬਾਪ ਨੂੰ ਸ਼ਾਦੀ ਹੋਈ, ਸਾਜ ਵੱਜਣ ਘਰ ਸਾਰੇ, ਢੋਲ ਨਗਾਰੇ।
ਲਾਲ ਜਵਾਹਰ ਮਾਨਿਕ ਮੋਤੀ, ਸਿਰ ਬਾਲਕ ਤੋਂ ਵਾਰੇ ਹੋ ਬਲਿਹਾਰੇ।
ਸੋਨਾ ਚਾਂਦੀ ਨਕਦ ਰੂਪਇਏ, ਦੇਣ ਮਸੀਤਾਂ ਦਾਰੇ, ਠਾਕੁਰ ਦਵਾਰੇ।
ਰੱਬ ਸਬਬ ਬਨਾਵੇ ਕਾਲੀ, ਆਣ ਬਨਣ ਦੁਖ ਸਾਰੇ, ਪਲ ਵਿੱਚ ਤਾਰੇ।
ਸੱਦ ਬੁਲਾਇਆ ਪੰਡਤ ਰਾਜੇ, ਜੋ-ਜੋ ਗੁਣੀ ਸ਼ਹਿਰ ਦਾ, ਜੋਤਸ਼ ਪਢਦਾ।
ਆਦਰ ਨਾਲ ਬਿਠਾਇਆ ਸਭ ਨੂੰ, ਸੀਸ ਚਰਨ ਪਰ ਧਰਦਾ, ਸੇਵਾ ਕਰਦਾ।
ਸੱਚ ਕਵੋ ਯਹ ਬਾਲਕ ਕੈਸਾ, ਕਰੋ ਨ ਕੋਈ ਪਰਦਾ, ਮੈਂਥੋਂ ਡਰਦਾ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਕਰਾਂ ਸਭ ਰਾਜੀ, ਖੋਲ ਖਜਾਨਾ ਜ਼ਰਦਾ, ਜੋ ਕੁਝ ਸਰਦਾ।
ਇਕ ਦਰ ਅਹਿਲ ਨਜੂਮੀ ਬੈਠੇ, ਇਕ ਦਰ ਪੰਡਤ, ਪਾਧੇ, ਜੋਤਸ਼ ਲਾਂਦੇ
ਵਾਰ ਮਹੂਰਤ ਘੜੀ ਨਛੱਤਰ, ਗਿਣ-ਗਿਣ ਲਗਨ ਲਗਾਂਦੇ, ਇਲਮ ਦੁਡਾਂਦੇ।
ਬੁਧਿਮਾਨ ਅਫਲਾਤੂ ਕੋਲੋਂ, ਤੱਬਹਾ ਤੇਜ਼ ਸ਼ਰਮਾਂਦੇ, ਬਾਤ ਸੁਣਾਂਦੇ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਲਿਖੇ ਜੋ ਵਿਧਨ, ਨਹੀਂ ਲੇਖ ਮਿਟ ਜਾਂਦੇ, ਸੁਘੜ ਬਤਾਂਦੇ

ਬਚਦਾ ਸਫਾ 21 ਤੇ.......

ਦੁਸ਼ਹਿਰਾ—ਅਧਿਆਤਮ ਦੀ ਰਾਹ

ਵਿਚਾਰਵਾਨ ਪ੍ਰੇਮੀ ਸੱਜਣੋ,

ਉਂਝ ਤਾਂ ਜਦੋਂ ਵੀ ਕਿਸੇ ਕਨੂੰਨ ਜਾਂ ਮਰਯਾਦਾ ਦੀ ਗੱਲ ਚਲਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਕਨੂਨ ਦੇ ਬਾਰੇ ਸਦਾ ਹੀ ਇਹ ਗੱਲ ਦੇਖੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਕਨੂੰਨ ਜਾਂ ਮਰਯਾਦਾ ਸਦਾ ਤੋਂ ਹੀ ਅੰਨੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਹਨਾ ਨੂੰ ਹਰ ਸਮੇਂ ਕਿਸੇ ਅਜਿਹੇ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜੋ ਇਸ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ ਦੇ ਸਕੇ ਪਰ ਜਦੋਂ ਗੱਲ ਧਰਮ ਦੀ ਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਇਹ ਚੀਜ਼ ਬਿਲਕੁਲ ਪੱਕੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਧਰਮ ਨੂੰ ਸਮਝਣ, ਪਰਖਣ ਅਤੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਲਈ ਸਦਾ ਹੀ ਕਿਸੇ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਦੀ ਲੋੜ ਰਹਿੰਦੀ ਰਹੀ ਹੈ। ਧਰਮ ਕਦੇ ਵੀ ਥਿਰ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਇਹ ਪਰਿਵਰਤਨ ਸ਼ੀਲ ਹੈ, ਬਦਲਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।

ਫੇਰ ਸਵਾਲ ਚਾਹੇ ਧਰਮਾਂ, ਮਜਹਬਾਂ ਦੇ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਉਹਨਾਂ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਤਿਉਹਾਰਾਂ ਦਾ। ਹਰ ਚੀਜ਼ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਛੁਪੇ ਰਹੱਸ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਨਾਲ ਹੀ ਇਹਨਾਂ ਧਾਰਮਿਕ ਗੀਤਾਂ ਦਾ ਪੂਰਾ ਪੂਰਾ ਲਾਭ ਲਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਤਿਉਹਾਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਹੈ—ਦਸ਼ਹਿਰਾ ਜੋ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਚੰਦਰ ਵਲੋਂ ਰਾਵਣ ਨੂੰ ਮਾਰ ਕੇ ਬੁਰਾਈ ਉੱਤੇ ਸੱਚਾਈ ਦੀ ਜਿੱਤ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀਕ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਮਨਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਤਿਉਹਾਰ ਦਸ ਸਿਰਾਂ ਵਾਲੇ ਰਾਵਣ ਦੇ ਮਰਣ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਨ ਲਈ ਹਰ ਸਾਲ ਮਨਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਰੂਰਤ ਹੈ ਇਸ ਦੇ ਅਸਲ ਸੰਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਦੀ।

ਬਾਹਰ ਦੇ ਰਾਵਣ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਕ ਰਾਵਣ ਹਰ ਜੀਵ ਦੇ ਅੰਦਰ ਹੈ। ਉਸਦੇ ਵੀ ਦਸ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਸਿਰ ਹਨ ਜਦੋਂ ਉਹਨਾਂ ਸਿਰਾਂ ਨੂੰ ਕਟਿੱਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਇਸ ਰਾਵਣ ਤੇ ਜਿੱਤ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਜੀਵ ਦਾ ਅਜਿਹਾ ਦਸ਼ਹਿਰਾ ਹੋ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਹੀ ਉਸਦੀ ਅਸਲ ਦੀਵਾਲੀ ਲਈ ਰਾਹ ਖੁਲਦੀ ਹੈ। ਸੱਚੇ ਦਸ਼ਹਿਰੇ ਨੂੰ ਮਨਾਉਂਣ ਲਈ ਲੜਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ ਮਨ ਰੂਪੀ ਰਾਵਣ ਨਾਲ ਜਿਸਦੇ ਪ੍ਰਮੁਖ ਸਿਰ ਨੇ ਕਾਮ, ਕ੍ਰੋਧ, ਲੋਭ, ਮੋਹ, ਅਹੰਕਾਰ, ਅਵਿਵੇਕ, ਈਰਖਾ, ਦੰਭ, ਨਿਰਦਇਤਾ, ਅਗਿਆਨਤਾ। ਜਦੋਂ ਕਿਸੇ ਪਰਿਪੂਰਣ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਦੀ ਕਿਰਪਾ ਸਦਕਾ ਪਰਬ੍ਰਹਮ ਪ੍ਰਭੂ ਦਾ ਰਾਹ ਹੱਥ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਸਮੇਂ ਮਨ ਰੂਪੀ ਰਾਵਣ ਉੱਤੇ ਹਮਲੇ ਹੋਣੇ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਪਰ ਇਹ ਮਨ ਸਿਧਿੱਆਂ ਮਰਦਾ ਨਹੀਂ।

ਇਸ ਨੂੰ ਮਾਰਣ ਲਈ ਲੋੜ ਪੈਂਦੀ ਹੈ ਇਸਦੇ ਸਿਰਾਂ ਨੂੰ ਵੱਢਣ ਦੀ। ਅਭਿਆਸੀ ਜਿਗਿਆਸੁ ਬਾਰ-ਬਾਰ ਗੁਰੂ ਬਚਨਾਂ ਦਾ ਅਭਿਆਸ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਇਸ ਮਨ ਨਾਲ ਝੂਜਦਾ ਹੈ।

“ਜੋ ਜਨ ਲੂਝੇ ਮੰਨੇ ਸਿਉਂ ਸੋ ਸੂਰੇ ਬਲਵਾਨ”

ਮਨ ਮਤੰਗ ਮਾਨੇ ਨਹੀਂ ਜਬ ਲਗ ਖਤਾ ਨ ਖਾਏ ‘ਇਹ ਮਨ ਬਿਨਾਂ ਠੋਕਰ ਦੇ ਸੰਭਲਦਾ ਨਹੀਂ। ਮਨ ਜਦੋਂ ਵੀ ਮੰਨਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਸੱਟ ਖਾ ਕੇ ਹੀ ਮੰਨਦਾ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਵੀ ਮਨ ਤੇ ਸੱਟ ਮਾਰਦੇ ਹਨ। ਕਦੇ ਵਚਨਾਂ ਦੀ ਤੇ ਕਦੇ ਕਿਰਪਾ ਦੀ ਤਾਂ ਜੋ ਆਪਣੇ ਸੱਚੇ ਸਰੂਪ ਨੂੰ ਜਾਣ ਸਕੇ ਅਤੇ ਜਨਮਾਂ ਜਨਮਾਂਤਰਾ ਦੇ ਝਗੜੇ ਤੋਂ ਛੁਟ ਸਕੇ। ਜਦੋਂ ਮਨ ਆਪਣੇ ਬਣਾਉਟੀ ਰੂਪ ਤੋਂ ਉੱਠ ਕੇ ਸੱਤ ਸਰੂਪ ਨੂੰ ਜਾਣ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਉਸ ਦਿਨ ਹੀ ਸੱਚਾ ਦੁਸ਼ਹਿਰਾ ਹੈ।

ਸਹੀ ਸੱਚੀ ਦੀਪਾਵਲੀ

ਦੀ ਦੀਪਕ ਸੱਦਗੁਰੂ ਵਚਨ ਹੈ ਲੇਕਰ ਚਲੇ ਜੋ ਹਾਥ।
ਜਗਤ ਅੰਧੇਰੀ ਕੋਠਰੀ ਕਬਹੂੰ ਨ ਭਟਕੇ ਪਾਥ ॥

ਪਾ ਪਾਥ ਮਿਲਾ ਗੁਰੂ ਵਚਨ ਸੇ ਮਾਰਗਦਰਸ਼ਕ ਪ੍ਰਾਣ।
ਅਰਧਕਪਾਲੀ ਦੇਸ਼ ਮੇਂ, ਹੋਏ ਨਾਦ ਸੰਧਾਨ॥

ਵ ਵਰਨਣ ਵੇਦ ਨ ਕਰ ਸਕੇ, ਉੱਚ ਟੰਕਾਰੀ ਨਾਦ।
ਜਿਉਂ ਗੁੰਗਾ ਕਿਸ ਮੁਖ ਕਹੇ ਖਾਏ ਗੁਡ੍ਹ ਕਾ ਸੱਵਾਦ॥

ਲੀ ਲੀਨ ਹੁਆ ਮਨ ਨਾਦ ਮੇਂ ਜਾ ਪਰ ਕਿਰਪਾ ਹੋਏ।
ਚਲਾ ਜਾਏ ਸਤਲੋਕ ਕੋ ਪੱਲਾ ਨਾ ਪਕੜੇ ਕੋਏ॥

ਮੰ ਮੰਤਰ ਗੁਪੱਤ ਅਤਿ ਗੁਪੱਤ ਹੈ ਗਗਨ ਮੰਡਲ ਕੇ ਦੇਸ਼।
ਪਹਲੇ ਪਗ ਸਦਗੁਰੂ ਖੜੇ, ਭੀਤਰ ਕਰੈ ਪਰਵੇਸ਼॥

ਗ ਗਗਨ ਮੰਡਲ ਕੇ ਬੀਚ ਮੇਂ ਤਹਾਂ ਨੂਰ ਭਰਪੂਰ।
ਨਿਗੁਰਾ ਕੀ ਕਰਨੀ ਨਹੀਂ, ਪਹੁੰਚਤ ਹੈਂ ਗੁਰੂ ਪੂਰ॥

ਲ ਲਹਰ ਆ ਰਹੀ ਨਾਮ ਕੀ ਗਗਨ ਮੰਡਲ ਭਰਪੂਰ।
ਪਾਵੇ ਜੋ ਹਰਿ ਕਿਰਪਾ ਹੋ, ਗੁਰੂ ਪੂਰਾ ਸਿਸ ਸ਼ੂਰ॥

ਮ ਮਨ ਤਨ ਸਾਧਨ ਮੇਂ ਲਗੇ, ਨਿੱਤ-ਨਿੱਤ ਦਰਸ਼ਣ ਪਾਏ।
ਭਰਮ ਭਯ ਅਗਿਆਨਤਾ ਪਲ ਮੇਂ ਸਭੀ ਮਿਟਾਯ॥

ਯ ਯਹੀ ਦਿਨ ਦਸ਼ਹਿਰਾ ਹੁਆ, ਮਿਟਾ ਰਾਵਣ ਅਗਿਆਨ।
ਸਦਗੁਰੂ ਕੀ ਸੇਵਾ ਕਰੀ, ਪਾਏ ਰਾਮ ਸੰਗ ਨਾਮ॥

ਹੋ ਹੋ ਗਿਆ ਪਰਮ ਪਰਕਾਸ਼ ਉਰ, ਨਾਮ ਕਿਆ ਪਰਵੇਸ਼।
ਕਾਇਆ ਅਯੋਧੱਯਾ ਖਿਲ ਉਠੀ, ਦੀਪਾਵਲੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼॥

किसी प्रेमी के देहांत के अवसर पर हुए प्रवचन जो तत्क्षण नोट कर लिए गए

प्रेमी सज्जनों,

आज आप और मैं जिस अवसर पर एकत्रित हुए हैं वह सब के लिए अलग-अलग तरीके से मायने रखता है। घर के सदस्यों के लिए यह अवसर अपने परिवारिक सज्जन के बिछुड़ने का है। आप में से कुछ सज्जन इसलिए भी आए हैं कि उन्हें उनके मित्र की मृत्यु का समाचार मिला है। कोई-कोई ऐसा भी है जो केवल हरि चर्चा के लिए आए हैं।

अत: आप जिस भी लिहाज से आए हैं, एक बात को जरूर समझ जाना कि जिस के लिए आप आए वो भी न रहा। ऐसे ही हम सब ने भी शरीर छोड़ना है।

आए हैं सो जाएंगे राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ चले एक बंधे जात जंजीर।।

जाना हम सब ने है पर जाने-जाने में अंतर है। किसी का जाना ऐसा है जैसे किसी भिखारी का हो। किसी दरिद्र दुखी का हो दूसरी तरफ कोई ''**जाना**'' ऐसा भी है जैसे किसी सम्राट का हो। ''**बंधे जात जंजीर**'' का अर्थ है दुखी अवस्था में, अज्ञानता की स्थिति में शरीर का छूटना। वैसे भी अज्ञानी को सम्मान देने के लिए कहा तो जाता ही है ''स्वर्गवासी'' या ''इन्होंने शरीर छोड़ा'' पर अज्ञानी कभी शरीर छोड़ता नहीं बल्कि शरीर तो उससे छीना जाता है। शरीर छोड़ना बहुत अलग बात है। शरीर तो तब छोड़ा जाता जिस दिन तुझे तेरा अपना आपा शरीर से अलग लगने लग जाए।

जब तक तूं स्वयं को शरीर माने बैठा। तब तक तो यह सवाल ही नहीं कि तूं शरीर छोड़ सके। जब तूने अपनी असलीयत को जान लिया तब शरीर वास्तव में तेरा रह ही नहीं जाता क्योंकि असलीयत के पता चलते ही सब पर्दे उठ जाते हैं, सब भेद खुल जाते हैं, द्वंद हटता है औऱ सत्त-असत्त का भेद खुलता है। यह स्थिति है ''**एक सिहांसन चढ़ चले**'' अर्थात जहां अपने पराए का भेद खत्म हो गया। जहां शरीर को ऐसे करके त्याग दिया गया जैसे कोई कपड़ा उतारा जाए।

परन्तु यह स्थिति बिना गुरू कृपा के, बिना परमात्मा के भजन से संभव नहीं। बिना सुमिरण के यह होश आनी संभव नहीं कि तूं कुछ औऱ है एवं शरीर कुछ औऱ। बिना भजन के यह पता नहीं चलता कि शरीर भरेगा पर ''तूं'' नहीं। परमात्मा के भजन से ही उतरने का, उस परमानंद में उतरने का।

जैसे तूं गाड़ी में यात्रा करता है इसीलिए गाड़ी को धोता है, साफ रखता है पर सफर खत्म होते ही गाड़ी को एक तरफ रख कर तूं घर में प्रवेश करता है उसी तरह इस साधन रूप शरीर को आवश्यकतानुसार साफ सुथरा रख, आवश्यक भोजन, वस्त्र इत्यादि मांगे देकर इससे अध्यात्म की यात्रा पूरी कर। यदि सारा समय इसे सजाने में ही दे दिया तो भजन करने का समय निकल जाएगा। अत:

अपना तो कोई है नहीं मात पिता सुत नार।
ताते हे मन सुमरिए हरि ही बारम्बार।।''

Ei bn n bqbeb

Idha nandati pecca nandati katapunno ubhayattha nandati punnam me katanti nandati bhiyyo nandati suggatim gato.

Verse 18: Here he is happy, hereafter he is happy; one who performs meritorious deeds is happy in both existences. Happily he exclaims: I have done meritorious deeds." He is happier still when he is reborn in a higher world

The Story of Sumanadevi

While residing at the Jetavana monastery in Savatthi, the Buddha uttered Verse of this book, with reference to Sumanadevi, the youngest daughter of Anathapindika.

In Savatthi, at the house of Anathapindika and the house of Visakha, two thousand bhikkhus were served with food daily. At the house of Visakha, the offering of alms-food was supervised by her granddaughter. At the house of Anathapindika, the supervision was done, first by the eldest daughter, next by the second daughter and finally by Sumanadevi, the youngest daughter. The two elder sisters attained Sotapatti Fruition by listening to the Dhamma, while serving food to the bhikkhus. Sumanadevi did even better and she attained Sakadagami Fruition.

Later, Sumanadevi fell ill and on her death-bed she asked for her father. Her father came, and she addressed her father as "younger brother" (Kanittha bhatika) and passed away soon after. Her form of address kept her father wondering and made him uneasy and depressed, thinking that his daughter was delirious and not in her right senses at the time of her death. So, he approached the Buddha and reported to him about his daughter, Sumanadevi. Then the Buddha told the noble rich man that his daughter was in her right senses and fully self-possessed at the time of her passing away. The Buddha also explained that Sumanadevi had addressed her father as "younger brother" because her attainment of Magga and Phala was higher than that of her father's. She was a Sakadagam whereas her father was only a Sotapanna. Anathapindika was also told that Sumanadevi was reborn in the Tusita deva world.

To be Cont.....

ਸਫਾ 16 ਦਾ ਬਚਦਾ.....

ਚਤਰ ਦਾਸ ਇਕ ਪੰਡਤ ਬੋਲੇ, ਬ੍ਰਿਧ ਸਰੀਰੋਂ ਮੋਟਾ, ਕੱਦੋਂ ਛੋਟਾ।
ਸੂਰਜ ਚੰਦ ਬ੍ਰਿਹਸਪਤ ਚੰਗਾ, ਰਾਹੂ ਕੇਤੂ ਵਿਚ ਖੋਟਾ, ਰਾਜੋਂ ਟੋਟਾ।
ਜਾਂ ਰਾਜਾ ਜਾਂ ਫਕਰ ਰੱਬ ਦਾ, ਸੈਰ ਕਰੋ ਚਹੁੰ ਕੋਟਾ, ਬਾਂਧ ਲੰਗੋਟਾ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਕਰਮ ਗਤ ਨਿਆਰੀ, ਰਾਖ ਰਾਮਕੀ ਓਟਾ, ਜਲ ਵਿੱਚ ਛੋਟਾ।
ਪੁੱਤ ਲਾਲ ਅਮੋਲਕ ਰਾਜਾ, ਨਹੀਂ ਹਜ਼ਾਰੀ ਲੱਖੀਂ, ਯਹ ਗੱਲ ਰੱਖੀਂ।
ਬਾਰਾਂ ਬਰਸ ਰਹੇ ਵਿੱਚ ਭੋਰੇ, ਮੂਲ ਨ ਵੇਖੀਂ ਅਕੱਖੀਂ, ਕੋਲ ਨ ਰੱਖੀ।
ਕੁਝ ਕੌੜਾ ਕੁਝ ਮਿੱਠਾ ਯਹ ਫਲ, ਮਜਾ ਦੀਦ ਦਾ ਚਕੱਖੀ, ਬਾਤ ਪਰਖੀਂ।
ਕਾਲੀ ਦਾਸ ਸੰਤ ਜਨ ਪੂਰਾ, ਰਾਤ ਗੁਜਾਰੇ ਅੱਖੀਂ, ਇਕ ਸੇ ਵੱਖੀ।
ਇਕ ਦਰ ਰਾਜਾ ਪਿਆ ਗਮੀ ਵਿੱਚ, ਇਕ ਦਰ ਦਿਲ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਦੀ ਬੜੀ ਆਜ਼ਾਦੀ।
ਇਕ ਦਰਸ਼ਾਦ ਆਬਾਦ ਹੋਇਆ ਮਨ, ਇਕ ਪਾਸੇ ਬਰਬਾਦੀ ਬਣੀ ਉਪਾਧੀ।
ਇਕ ਦਰ ਬੇਪਰਵਾਹ ਬਾਦਸ਼ਾਹ, ਇਕ ਦਰ ਦਿਲ ਫਰਿਆਦੀ, ਸੁੱਨ ਸਮਾਧੀ।
ਇਕ ਦਰ ਪੂਰਨ ਬ੍ਰਹੱਮ ਦਾਸ ਜੀ, ਇਕ ਦਰ ਜੀਵ ਅਨਾਦੀ, ਬਹੁ ਅਪਰਾਧੀ।
ਬੋਲ ਕਿਹਾ ਇਕ ਪੰਡਤ, ਜਿਸਨੂੰ ਦੁਰਗਾ ਦਿੱਤਾ ਵਰ ਸੀ, ਨੇੜੇ ਘਰ ਸੀ।
ਸ਼ਿਵ ਸ਼ਕਤਿ ਕਾ ਭਗਤੀ ਕਰੇਗਾ, ਵਿੱਚ ਜਗਤ ਜਿਓਂ ਨਰਸੀ, ਸੇਵਾ ਫੜਸੀ।
ਵਾਂਗਰ ਸ਼ੇਰ ਦਲੇਰ ਵੋਵਸੀ, ਜੋਰ ਕੋਈ ਨ ਕਰਸੀ, ਕਿੱਤੋਂ ਨ ਡਰਸੀ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਸਾਲ ਬਾਰ੍ਹਵੇਂ, ਜਾਂ ਜੀਵੇ ਜਾਂ ਮਰਸੀ, ਬਿਪਤਾ ਪਡਸੀ।
ਮਸਤਕ ਚੰਦ ਮੁਕੰਦ ਮੂਰਤਾਂ, ਪਰਮ ਆਨੰਦ ਪੁਨੀਤਾ, ਪਡਸੀ ਗੀਤਾ।
ਕੁਲ ਮੁਲਕ ਕਾ ਮਾਲਕ ਬਾਲਕ, ਖਾਲਕ ਪੈਦਾ ਕੀਤਾ, ਕਰ ਪਰਤੀਤਾ।
ਲਾਇਕ ਸਦਾ ਸਹਾਇਕ ਸਭ ਦਾ, ਸੁਖਦਾਇਕ ਸੁਖ ਰੀਤਾ, ਹੋਸੀ ਮੀਤਾ।
ਕਾਲੀ ਦਾਸ ਅਮਰ ਹੋ ਜਸੀ, ਜਦੋਂ ਪ੍ਰੇਮ ਰਸ ਪੀਤਾ, ਆਨੰਦ ਲੀਤਾ।
ਰਾਜਾ ਆਖੇ ਸੁਣੋ ਵਜੀਰੋ, ਕਰਮ ਰੇਖ ਜੋ ਆਏ, ਨਹੀਂ ਮਿਟਾਏ।
ਅਚਨ ਚੇਤ ਲਗੇ ਨ ਮਸਤਕ, ਪੂਰਨ ਲਿਓ ਛਪਾਏ, ਭੋਰੀਂ ਜਾਏ।
ਬਾਰ੍ਹਾਂ ਬਰਸ ਰਹੇ ਵਿੱਚ ਭੋਰੇ, ਪਿਆ ਪਰਵਰਸ ਪਾਏ, ਟਹਿਲ ਕਰਾਏ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਕਰੇ ਰਲ ਖੁਸ਼ੀਆਂ, ਜੋ ਰੱਬ ਫੇਰ ਬਿਠਾਏ, ਵੇਖੀ ਜਾਏ।
ਪੰਡਤ ਪਾਸ ਬਿਠਾਏ ਰਾਜੇ, ਕਰ ਮਾਯਾ ਦੀ ਢੇਰੀ, ਸੰਤਾਂ ਚੇਰੀ।
ਖੋਲ ਖਜ਼ਾਨਾ ਕਾਰੂੰ ਵਾਲਾ, ਬਖਸ਼ਸ਼ ਕਰੇ ਬਥੇਰੀ, ਚਾਰ ਚੌਫੇਰੀ
ਨੀਵੇਂ ਹੱਥ ਵਸਾਏ ਧੋਲਤ, ਝੜਣ ਜਿਵੇਂ ਫਲ ਬੇਰੀ, ਝੁਕੇ ਵਧੇਰੀ।
ਕਾਲੀ ਦਾਸ ਭਲੇ ਰਾਹ ਲਈਏ, ਇਹ ਮਾਯਾ ਨ ਮੇਰੀ, ਨ ਸ਼ੈ ਤੇਰੀ।
ਬਰਸ ਦਿਨਾਂ ਦਾ ਹੋਇਆ ਪੂਰਨ, ਜਿਉਂ ਕਰ ਪੂਰਨਮਾਸ਼ੀ, ਚੰਦ ਅਕਾਸ਼ੀ।
ਬਾਰ-ਬਾਰ ਮੁੰਹ ਚੁੰਮੇ ਮਾਤਾ, ਲਾਡ ਕਰੇ ਮੁਖ ਹਾਸੀ, ਘਰ ਸਭ ਦਾਸੀ।
ਕਰਮਾਂ ਦੀ ਗਤ ਕੌਣ ਜਾਨਦਾ, ਕੀ ਬਿਧਿ ਖੇਲ ਰਚਾਸੀ, ਬਿਪਤਾ ਪਾਸੀ।
ਕਾਲੀਦਾਸਾ ਬਰਸ ਬਾਰ੍ਹਵੇਂ, ਧਰੇ ਰੂਪ ਬਨਵਾਸੀ, ਜੋਗ ਕਮਾਸੀ।

ਚਲਦਾ.....

ਬਾਣੀ ਦਾ ਸਾਰ

ਬੰਦਓ ਗੁਰੂ ਪਦ ਕੰਜ ਕ੍ਰਿਪਾ ਸਿੰਧੁ ਨਰ ਰੂਪ ਹਰਿ।
ਮਹਾ ਮੋਹ ਤਮ ਪੁੰਜ ਜਾਸੁ ਵਚਨ ਰਵਿ ਕਰਨੀਕਰ।।
ਸਰਵ ਵੇਦਾਂਤ ਸਿਧਾਂਤ ਗੋਚਰ ਤਮ ਗੋਚਰਮ। ਗੋਬਿੰਦਮ ਪਰਮਾਨੰਦਮ ਸਦਗੁਰੂੰਤਮ ਪ੍ਰਨਤੋਸਮ।

ਪ੍ਰਭੂ ਪ੍ਰੇਮੀ ਸੱਜਣੋਂ ਪਰਕਤਚ

ਸੰਤ ਕਬੀਰ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ ਇਸਾ ਆਦਿ ਅਨੇਕ ਮਹਾਂਪੁਰੁਖ ਸੰਸਾਰ ਚ ਆਏ ਚਲੇ ਗਏ। ਇਹ ਯਾਤਰਾ ਸਦਾ ਤੋਂ ਚਲਦੀ ਆ ਰਹੀ। ਇਹ ਕੋਈ ਗਿਣਵਾਂ ਚੁਣਵਾਂ ਜਿਹਾ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਗਿਣਵਾਂ ਚੁਣਵਾਂ ਹੁੰਦਾ ਕਿ ਗਿਣਿਆ ਜਾਵੇ ਕਿ ਅੱਜ ਤਕ ਇੱਨੇ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਆਏ ਇਨੇ ਨਹੀਂ ਆਏ। ਅਜਿਹੀ ਗਿਣਤੀ ਨਹੀਂ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਇਕ ਐਸੀ ਲੜੀ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਕ ਪਰਿਵਾਰ ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਕਹੀ ਜਾਏ ਵੰਸ਼ ਕਿਹਾ ਜਾਏ ਫੇਰ ਹੈ ਫੇਰ ਹੈ ਅੱਗੇ ਤੋ ਅੱਗੇ ਚਲਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਚਲਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਹਾਪੁਰਖ ਵੀ ਸੰਤ ਜਨ ਵੀ ਗਿਆਨਵਾਨ ਸਦਗੁਰੂ ਵੀ ਉਸੇ ਹੀ ਲੜੀ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੈ। ਬਰਾਬਰ ਚਲਦੇ ਆ ਰਿਹੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਅਜਿਹਾ ਨਹੀਂ ਕਿ ਉਹ ਹੁਣ ਹੈ ਅੱਗੇ ਨਹੀਂ ਕਿਉਂਕਿ ਇਕ ਬਾਰ ਜੇ ਬੀਜ ਨਾਸ਼ ਹੋ ਜਾਵੇ ਖਤਮ ਹੋ ਜਾਵੇ ਤਾ ਦੁਬਾਰਾ ਉਤਪੱਤੀ ਨਹੀਂ।

ਸਦੈਵ ਹੈ ਪਹਿਲੀ ਚੀਜ਼ ਅਤੇ ਦੂਸਰੀ ਚੀਜ਼ ਜੋ ਉਸ ਤੋਂ ਵੀ ਜਿਆਦਾ ਸਮਝਣ ਯੋਗ ਹੈ ਕਿ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਦਾ ਹੋਣਾ ਜਾਂ ਨ ਹੋਣਾ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਤੋਂ ਮਹਤਵਪੂਰਣ ਹੈ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝ ਜਾਣਾ। ਮਹਾਪੁਰਖ ਹੈ ਨਹੀਂ ਹੈ ਇਹ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਛੋਟੀ ਜਿਹੀ ਗੱਲ ਪਰ ਕੋਈ ਸਮਝ ਗਿਆ ਇਹ ਬਹੁਤ ਬੜੀ ਗੱਲ। ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਚ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਇਕ ਵਚਨ ਕਿਤਾ ਹੈ ਖਤਰੀ, ਬ੍ਰਾਹਮਣ, ਸ਼ੂਦ, ਵੈਸ਼ ਉਪਦੇਸ਼ ਚੋ ਵਰਣਾਂ ਕੋ ਸਾਂਝਾ। ਇਸਦਾ ਇਕ ਮੋਟਾ-ਮੋਟਾ ਜਿਹਾ ਅਰਥ ਵੀ ਹੈ ਉਹ ਅਰਥ ਹੈ ਸਰਕਾਰਾਂ ਦੇ ਹਿਸਾਬ ਨਾਲ ਕਿ ਇਸ **Cast** ਦਾ ਉਸ **Cast** ਦਾ ਇਸ ਜਾਤ ਦਾ ਉਸ ਪਾਤ ਦਾ ਉਹ ਵੀ ਅਰਥ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਰਾਜਨੇਤਾ ਜਦੋਂ ਵੀ ਬੋਲੇਗਾ ਉਹ ਅਪਨੇ ਹੱਕ ਦੀ ਜਾਂ ਅਪਣੇ **level** ਦੀ ਗੱਲ ਪਰ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਚੋਂ ਵਰਣਾਂ ਕੋ ਸਾਂਝਾ ਚੋਂ ਵਰਣਾਂ ਕੋ ਸਾਂਝਾ ਅਰਥਾਤ ਐਸਾ ਨਹੀਂ ਕਿ ਇਕ ਦੇ ਲਈ ਕੁਝ ਹੋਰ ਜਾਂ ਦੂਸਰੇ ਲਈ ਕੁਝ ਹੋਰ।

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ ਜਿਸ ਸਮੇ ਗਿਆਨ ਧਿਆਨ ਦੀ ਅਵਸਥਾ ਚ ਅਲੋਪ ਹੋਏ ਤਿੰਨ ਦਿਨਾਂ ਦੀ ਅਲੋਪਿਤ ਅਵਸਥਾ ਕਹ ਲੋ ਧਿਆਨ ਅਵਸਥਾ ਕਹ ਲੋ। ਉਸ ਚੋ ਬਾਹਰ ਆਉਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ। ਜੋ ਪਹਲੇ ਵਚਨ ਉਚਾਰੇ ਉਸ ਨੂੰ ਅੱਜ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਸੁਖਮਨੀ ਸਾਹਿਬ। ਇਹ ਪਹਲੇ ਵਚਨ ਸਨ ਕਿਉਂਕਿ ਮਾਂ ਕੁਝ ਬੋਲੇ ਪਿਤਾ ਕੁਝ ਬੋਲੇ ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰ ਕੁਝ ਬੋਲਣ ਤਾਂ ਜਬਾਵ ਨਹੀਂ। ਜਿਸ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਬੇਈਂ ਨਦੀ ਵਿੱਚ ਤਿੰਨ ਦਿਨ ਅਲੋਪ ਰਿਹੇ। ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਕੀ ਹੈ ਅਲੋਪ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੋਏ ਅਲੋਪ, ਅਲੋਪ ਦਾ ਇਹ ਅਰਥ ਨਹੀਂ ਕਿ ਗਾਇਬ ਹੋ ਗਏ ਨਜ਼ਰ ਨਹੀਂ ਆਏ ਅਲੋਪ ਦਾ ਅਰਥ ਸ਼ਾਂਤ ਸੁੰਨ ਹੈ।

ਸੁੰਨ ਕੈਸਾ ਹੈ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਣ ਵਾਲੇ ਨੇ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕੀਤੀ ਕੁਝ ਸਮਝ ਆਇਆ ਬਸ ਉਸ ਸਮਝ ਦੇ ਵਿੱਚ ਡੁੱਬ ਗਏ। ਏਕਾਗ੍ਰ ਹੋ ਗਏ। ਘਰ ਦੇ ਕੋਈ ਪੁਛ ਰਿਹੇ, ਬਾਹਰ ਦੇ ਕੁਝ ਸੱਜਨ ਮਿਤਰ ਪੁਛ ਰਿਹੇ ਕੋਈ ਜਬਾਵ ਨਹੀਂ ਸ਼ਾਂਤ-ਸ਼ਾਂਤ-ਸ਼ਾਂਤ। ਉਸ ਨੂੰ ਬਾਲਾ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਨੇ ਸ਼ਬਦ ਦਿੱਤਾ ਕਿ ਅਲੋਪ ਹੋ ਗਏ ਕਿ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਤਿੱਨ ਦਿਨ ਅਲੋਪ ਰਿਹੇ। ਇਹ ਧਿਆਨ ਦੀ ਅਵਸਥਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਸਮੇ ਉਸ ਅਵਸਥਾ ਚੋਂ ਬਾਹਰ ਆਏ ਕੁੱਝ ਹਲਕਾ ਜਿਹਾ ਉਚਾਰਣ ਕੀਤਾ ਉਹ ਪਹਿਲੇ ਜੋ ਸ਼ਬਦ ਉਚਾਰੇ ਉਸਨੂੰ ਕਿਹਾ ਸੁਖਮਨੀ ਸਾਹਿਬ।

ਸੁਖਮਨੀ ਅਰਥਾਤ ਇੱਕ ਉਹ ਮਣੀ ਫੜਾਈ ਜਿਸ ਤੋਂ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸੁੱਖ ਉਪਜਦਾ ਹੈ ਪਰ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜੇ ਸਮਝਿਆ ਜਾਵੇ, ਜੇ ਗੱਲ ਬੁੱਧੀ ਚ ਬੈਠ ਜਾਏ ਦਿਮਾਗ ਚ ਬੈਠ ਜਾਵੇ। ਜੇ ਨ ਬੈਠੇ ਸਿਰਫ ਪਾਠ ਹੋ ਜਾਵੇ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਤਾਂ ਨਹੀਂ। ਕਿਉਂਕਿ ਜੇ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੂੰ ਸੁੱਖ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਇਆ ਤਾਂ ਉਸ ਵਿੱਚ ਉਤਰ ਕੇ ਹੋਇਆ। ਉਪਰੋਂ ਉਪਰੋਂ ਕੁਝ ਕਿਹਾ ਨਹੀਂ ਅੰਦਰੂਨੀ ਗਹਿਰੇ ਚ ਉਤਰੇ ਸ਼ਾਂਤ ਹੋਏ ਪਰਮਸ਼ਾਂਤ ਹੋਏ ਜੋ ਇਸ ਦੁਨਿਆਂ ਦੀ ਅੱਗ ਸੀ ਅਗਨ ਸੀ ਉਸ ਤੋਂ ਬਹੁਤ ਉੱਚਾ ਉੱਠ ਕੇ ਸ਼ਾਂਤ ਹੋਏ ਉਸ ਤੋਂ ਅਲਗ ਹੋ ਕੇ ਸ਼ਾਂਤ ਹੋਏ ਇਹ ਪਰਵਾਹ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਕਿ ਪਿਤਾ ਕਿਆ ਕਹ ਰਹੇ ਕਿਉਂਕਿ ਪਿਤਾ ਨੇਂ ਉਹੀ ਕਿਹਾ ਜੋ ਆਮ ਪਿਤਾ ਕਹਿ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪੁੱਤ ਕਮਾਓ, ਖਾਓ ਤੇ ਖਲਾਓ। ਉਸ ਸਮੇ ਵੀ ਪਿਤਾ ਨੇ ਇਹੀ ਕਹਿਣਾ ਪਰ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਸਨ ਇਸ ਗੱਲ ਨੂੰ ਸਮਝ ਗਏ ਕਿ ਕੇਵਲ ਖਾਣਾ ਖਿਲਾਣਾ ਹੀ ਜੀਵਨ ਨਹੀਂ। ਜੀਵਨ ਕੁਝ ਏਸਾ ਹੈ ਜੋ ਇਸ ਸਾਰੇ ਚੱਕਰ ਤੋ ਬਹੁਤ ਅਲਗ ਸਮਝ ਆ ਗਿਆ ਤਾਂ ਜੀਉਂਦੇ ਜੀ ਅਲਗ ਹੈ ਨਹੀਂ ਸਮਝ ਆਇਆ ਤਾਂ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਰਹਿ ਵੀ ਰਿਹੇ ਵਿੱਚ ਅਤੇ ਸੜ ਵੀ ਰਿਹਾ।

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ ਉਸ ਪਰਮ ਸ਼ਾਂਤੀ ਰੂਪ ਨੂੰ ਸਮਝ ਸਕੇ ਸਮਝ ਕੇ ਅੱਗੇ ਉਹ ਵਚਨ ਕੀਤੇ ਜਿਸ ਦੇ ਨਾਲ ਦੁਨਿਆਂ ਨੂੰ ਰਸਤਾ ਮਿਲੇ ਅਤੇ ਇਹ ਘਟਨਾ ਕੇਵਲ ਇਕ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਹਰ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਇਕ-ਇਕ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਦੇ ਜੀਵਨ ਚ ਇਹ ਘਟਣਾ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ਉਹ ਮਹਾਪੁਰਖ ਚਾਹੇ ਬਨਾਰਸ ਦੇ ਹੈ, ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਹੈ ਜਾਂ ਕਿਸੇ ਦੇਸ਼ ਦੇਸ਼ਾਂਤਰ ਦੇ ਹੈ ਕੋਈ ਅੰਤਰ ਨਹੀਂ। ਹਰ ਇਕ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਦੇ ਜੀਵਨ ਚ ਇਹ ਘਟਣਾ ਛੋਟੇ ਜਾਂ ਬੜੇ ਮਾਪ ਚ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਸ਼ਾਂਤੀ ਆਈ ਟਿਕਾਣਾ ਆਇਆ ਥੋੜਾ ਜਿਹ ਉਹ ਜੋ ਟਿਕੀ ਹੋਈ ਅਵਸਥਾ ਸੀ ਉਸਤੋਂ ਅਗਲੇ ਜੋ ਵਚਨ ਕਿੱਤੇ ਉਹ ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਗ੍ਰੰਥ ਸ਼ਾਸਤਰ ਹਨ। ਟਿਕੀ ਹੋਈ ਅਵਸਥਾ ਦੇ ਵਚਨ।

ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਜੀਵਨ ਚ ਇਹ ਘਟਣਾ ਆਈ ਉਨਾਂ ਨੇ ਵੀ ਅੱਗੇ ਜੋ ਵਚਨ ਕੀਤੇ ਉਹ ਵੀ ਬਿਲਕੁਲ ਹੂ-ਬ-ਹੂ ਉਸੇ ਚੀਜ ਦੇ ਜੋ ਵਚਨ ਗੁਰੂ ਅਰਜੁਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਆਰਤੀ ਰੂਪ ਕਿਹੇ ਉਹੀ ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ ਆਰਤੀ ਰੂਪ ਚ ਕਹਿ ਗਏ। ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਹੇਰ ਫੇਰ ਹੈ ਅਰਥ ਇਕੋਂ ਜਗਾ ਟਿਕ ਰਿਹਾ ਕਿਸੀ ਭਗਤ ਨੇ ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਅੱਗੇ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕਿਤੀ ਕਿ ਜੀ ਆਰਤੀ ਕੀ ਹੈ। ਕਿ ਆਰਤੀ ਕਰਦੇ ਸਵੇਰੇ ਸ਼ਾਮ ਸੰਧਿਆ ਵਾਦਣ ਕਰਦੇ, ਕੋਈ ਹੱਥ ਜੋੜਦਾ, ਕੋਈ ਮੱਥੇ ਟੇਕਦਾ ਹੈ, ਕੋਈ ਗਾ ਰਿਹਾ ਅਸਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਆਰਤੀ ਕੀ ਹੈ। ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਵਚਨ ਕੀਤਾ ਕਿ

ਸੁੰਨ ਸੰਧਿਆ ਤੇਰੀ ਦੇਵ ਦਿਵਾਕਰ।
ਅਧਪਤਿ ਆਦਿ ਸਮਾਈ।

ਸੁਨ ਸੰਧਿਆ ਕਹਿੰਦੇ ਕਿ ਸੰਧਿਆ ਉਸ ਸਮੇ ਹੈ ਜਿਸ ਸਮੇ ਸੁਨ ਹੋ ਗਿਆ। ਜੇ ਸੁਨ ਨ ਹੋ ਸਕਿਆ ਤਾਂ ਸੰਧਿਆ ਨਹੀਂ। ਸੰਧਿਆ ਦਾ ਅਰਥ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਮੇਲ, ਸੰਧੀ-ਜੁੜਨਾ ਸੰਧਿਆ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਜਿਸ ਸਮੇ ਪਿਛਲਾ ਦਿਨ ਖਤਮ ਹੋਣ ਨੂੰ ਹੈ ਅਤੇ ਰਾਤ ਆਉਨ ਨੂੰ ਹੈ। ਦਿਨ ਅਤੇ ਰਾਤ ਜਿਸ ਸਮੇ ਜਾ ਕੇ ਜਾਂ ਕਹੋ ਸੂਰਜ ਅੱਧਾ ਬਾਹਰ ਹੈ ਅੱਧਾ ਡੁੱਬ ਚੁੱਕਾ ਉਸ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਸੰਧਿਆ। ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ ਕਹਿੰਦੇ ਕਿ ਸੰਧਿਆ ਭਾਈ। ਸੰਧਿਆ ਦਾ ਕੋਈ ਹਿਸਾਬ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਅਜਿਹੀ ਗਤੀਵਿਧੀ ਨਹੀਂ ਜਾਂ ਕੋਈ ਸੂਰਜ ਦਾ ਡੁੱਬਣਾ ਜਾਂ ਚੜਨਾ ਸੰਧਿਆ ਨਹੀਂ। ਸੰਧਿਆ ਦਾ ਅਰਥ ਜਿਸ ਸਮੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਭਜਨ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਹੀ ਸੁਨ ਹੋ ਗਿਆ। ਉਹ ਸਮਾਂ ਉਸ ਦੀ ਸੰਧਿਆ ਦਾ ਹੈ, ਮੇਲ ਦਾ ਹੈ। ਸੰਧੀ ਦਾ ਹੈ ਜਾਂ ਕਹੋ ਜੁੜਣ ਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਜੁੜਨਾ ਕਿਸ ਦੇ ਨਾਲ ਜੁੜਨਾ ਉਸ ਦੇ ਨਾਲ ਜਿਸਦੇ ਨਾਲੋਂ ਮਾਂ ਦੇ ਗਰਭ ਚੋਂ ਬਿਛੜੇ ਹੋਏ ਹੈਂ। ਕਿਉਂਕਿ ਜੋੜ ਉਦੋਂ ਹੀ ਸੰਭਵ ਜੇ ਕਿਸੇ ਸਮੇ ਟੁਟਿੱਆ ਜਿਹੜਾ ਟੁਟਿੱਆ ਹੀ ਨਹੀਂ ਉਸ ਨੂੰ ਜੁੜਣ ਲਈ ਕਿਹਾ ਵੀ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ।

ਚਲਦਾ.....

पावन श्री अलख ज्यन्ति महोत्सव

पावन श्री अलख ज्यन्ति समारोह 9-10 दिसंबर को सिद्ध झंडी आश्रम में ही मनाया जाएगा। विस्तृत सूचना अगले अंक में

सत्संग सूचनाएं

16 अक्तूबर दिन रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी।

स्थान : 85 मोती बाग, नज़दीक लद्धेवाली यूनिवर्सिटी

समय : प्रात: 11 से 01:00 तक।

प्रार्थी : श्री धर्मपाल शर्मा, सम्पर्क सूत्र : 9855018590

23 अक्तूबर दिन रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी।

स्थान : 266 करोल बाग, नज़दीक DIPS School

समय : प्रात: 11 से 01:00 तक।

प्रार्थी : श्री हरदयाल सिंह, सम्पर्क सूत्र : 9988314695

दीपावली

दीपावली का सत्संग 30 अक्तूबर रविवार को आश्रम में ही होगा। समय रहेगा प्रात: 10 से 11 तक

आदम को खुदा मत कहो आदम खुदा तो नहीं।
लेकिन खुदा के नूर से हरगिज़ जुदा नहीं।।